सीएसआइआर ने किया कंपनी से करार

संवाद सहयोगी, पालमपुर : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी दिवस पर सीएसआइआर के हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (आइएचबीटी) पालमपुर ने मल्टीग्रेन उच्च प्रोटीन युक्त पेय और सूप मिश्रण तैयार किया है। संस्थान ने शुक्रवार को मै. एसैस इंडिया इंपेक्स सेंटर प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली के साथ मल्टीग्रेन उच्च प्रोटीन युक्त पेय और सूप मिश्रण उत्पादन के लिए करार किया। संस्थान कंपनी को इसके लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरित करेगा। यह कंपनी एक वर्ष के भीतर इन उत्पादों को बाजार में उतार देगी। इनका उत्पादन हिमाचल प्रदेश में ही किया जाएगा। ये उत्पाद लोगों की प्रोटीन आवश्यकताओं को पूरा करेंगे। संस्थान ने मै. मां चांमुडा फ्लावर पालमपुर के साथ भी व्यावसायिक पुष्प पौधों के उत्पादन के लिए करार किया। कंपनी संस्थान की सुविधाओं व तकनीक का उपयोग कर प्रति वर्ष 1.5 लाख पौधे तैयार करेगी।

जैविक कृषि में सहायक होगा सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर आइएचबीटी पालमपुर में बोले वैज्ञानिक, संस्थान के कार्यों से जनता को करवाया अवगत, विद्यार्थियों को दिखाई प्रयोगशालाएं

संवाद सहयोगी, पालमपुर : सीएसआइआर के हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर ने शुक्रवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया। इस मौके पर संस्थान की शोध एवं विकास गतिविधियों की जनता को जानकारी दी गई। स्थानीय स्कूलों के विद्यार्थियों को प्रयोगशालाओं में ले जाकर शोध कार्यों की जानकारी दी गई। इस अवसर पर आयोजित समारोह में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के एपी गोयल, कृषि विश्वविद्यालय एवं शेर-ए-कश्मीरकृषि विश्वविद्यालय श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) के पूर्व कुलपति डॉ. तेज प्रताप ने जैविक कृषि के परिप्रेक्ष्य और भविष्य की रणनीतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज की परिस्थितियों में प्रदूषण जैसी समस्याओं से निजात पाना अति आवश्यक है। इसके लिए जैविक कृषि एक बेहतर विकल्प है। जैविक कृषि के मुख्यतः चार पहलू हैं-ओमा, वैदिक, प्राकृतिक और ईको फार्मिंग। हमें इन्हें अपनाना होगा। जैविक कृषि में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग सहायक सिद्ध हो सकता है। वर्तमान में जैविक कृषि का भारत में कुल व्यवसाय 0.3 प्रतिशत है, जबकि वैश्विक स्तर पर एक प्रतिशत है।

सीएसआइआर पालमपुर में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता मुख्य अतिथि के साथ ● जागरण

समारोह में वैज्ञानिक अनुपम वर्मा ने प्राचीन भारत की सीखने की कला के शानदार आधार को याद दिलाया। हरित क्रांति और देश के स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार के लिए शोध एवं विकास संगठनों के योगदान की सराहना की। उन्होंने औद्योगिक एंजाइमों के बायोप्रोस्पेक्टिंग में संस्थान के प्रयासों की भी सराहना की। जैविक कृषि की बाधाओं पर भी जानकारी दी। संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने संस्थान के शोध व विकास कार्यों पर प्रकाश डाला। संस्थान ने उत्तरी क्षेत्र में प्राकृतिक स्वीटनर स्टीविया की खेती को बढ़ावा देकर रोजगार के लगभग 0.5 मिलियन अवसर प्रदान किए हैं। उन्होंने बताया कि इस वर्ष राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस को 'सतत भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी' थीम के साथ मनाया गया जा रहा है। कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति अशोक कुमार सरियाल ने विद्यार्थियों को व्यर्थ संसाधनों का उपयोग कर जैविक खाद तैयार करने के लिए प्रेरित किया। कृषि विश्वविद्यालय पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. सीएल आचार्य ने भी जानकारी दी। डीएवी विश्वविद्यालय जालंधर के डीन एवं मानव संसाधन विकास केंद्र सीएसआइआर के पूर्व प्रमुख डॉ. नरेश कुमार ने विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं वैज्ञानिकों को भारत में प्रौद्योगिकी में नवोन्मेष को प्रोत्साहित करने और इसे बौद्धिक संपदा अधिकार के अंतर्गत पंजीकृत करने के लिए कहा।

क्यों मनाते हैं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी दिवस

विज्ञान व प्रौद्योगिकी के साथ समाज और उद्योग के एकीकरण के लिए राष्ट्र प्रत्येक वर्ष 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाता है। यह दिवस 1998 में पोखरण में सफलतापूर्वक किए गए परमाणु परीक्षण तथा विश्व का छठा परमाणु देश बनने पर मनाया जाता है। इस दिन रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने त्रिशूल मिसाइल का सफल परीक्षण किया था। इसके अतिरिक्त इस दिन सीएसआइआर के स्वदेशी विमान हंस-3 ने भी बेंगलुरू में उड़ान भरी थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी।

करार....

पालमपुर : मल्टीग्रेन उच्च प्रोटीनयुक्त हस्तांतरण पर एमओयू के दौरान सीएसआईआर के निदेशक डा. संजय कुमार व कंपनी के अधिकारी एक साथ

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर एमओयू

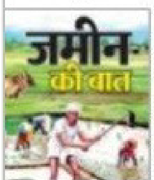

पालमपुर — राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर सीएसआईआर-आईएचबीटी संस्थान ने एसेस इंडिया इंपेक्स सेंटर के साथ मल्टीग्रेन उच्च प्रोटीनयुक्त पेय और सूप मिश्रणों को बनाने के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण का करार किया गया। यह कंपनी एक वर्ष के भीतर इन उत्पादों को बाजार में उतार देगी तथा इनका उत्पादन हिमाचल में किया जाएगा। यह उत्पाद लोगों की प्रोटीन आवश्यकताओं को पूरा करेंगे। कंपनी के साथ व्यावसायिक पुष्प पौधों (1.5 लाख पौधे प्रति वर्ष) के उत्पादन को भी एक करार किया गया। इस अवसर पर एपी गोयल विवि के कुलपति डा. तेज प्रताप ने कहा कि जैविक कृषि में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग सहायक सिद्ध हो सकता है। वैज्ञानिक प्रो. अनुपम वर्मा ने प्राचीन भारत की सीखने की कला के शानदार आधार को याद दिलाया। निदेशक डा. संजय कुमार ने संस्थान आर्थिकी को बढ़ावा देने के लिए शोध एवं विकास योगदान पर प्रकाश डाला। कृषि विवि के कुलपति डा. अशोक सरियाल ने विद्यार्थियों को व्यर्थ संसाधनों का उपयोग कर जैविक खाद तैयार करने के लिए प्रेरित किया।

आर्गेनिक एग्रीकल्चर के बारे में बताया

पालमपुर। शुक्रवार को हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया। समारोह में केंब्रिज इंटरनेशनल स्कूल पालमपुर के विधार्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। स्कूल के प्रधानाचार्य ने बताया कि प्रश्नोत्तरी सत्र के अंतर्गत हमारे विद्यालय के छात्रों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। मुख्यातिथि डॉ. अनुपम वर्मा ने बच्चों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए तथा उनके प्रश्नों के लिए उन्हें सराहा। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में एपीजी यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. तेज प्रताप ने आर्गेनिक एग्रीकल्चर के बारे में रोचक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि छात्रों ने संस्थान के बारे में भी जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम सीएसआईआर–आईएचबीटी में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह आयोजित

हमें जैविक कृषि की ओर अग्रसर होना होगा : डॉ. तेज

हिमाचल दस्तक | पालमपुर

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ समाज और उद्योग के एकीकरण के लिए प्रौद्योगिक रचनात्मकता और वैज्ञानिक सशक्तिकरण की खोज के प्रतीक के रूप में राष्ट्र प्रत्येक वर्ष 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाता है। यह दिवस 1998 में पोखरण में सफलतापूर्वक किए गए परमाणु परीक्षण तथा विश्व का छठा परमाणु देश बनने पर मनाया जाता है। इस दिन, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने त्रिशूल मिसाइल का सफल परीक्षण किया था, जिसे अब भारतीय वायुसेना एवं सेना द्वारा उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त इस दिन सीएसआईआर के स्वदेशी विमान हंस-3 ने भी बेंगलुरू में उड़ान भरी थी। इंजीनियरों, वैज्ञानिकों और देश के तकनीशियनों द्वारा प्राप्त की गई इन बेहद सफल उपलब्धियों के आधार पर

तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। इस वर्ष राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस को 'सतत भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी' थीम के साथ मनाया गया जा रहा है। सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस को संस्थान के शोध एवं विकास गतिविधियों पर जनता को प्रत्यक्ष जानकारी प्रदान करने के लिए जन-दिवस के रूप में मनाया। स्थानीय स्कूलों के छात्रों को वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में जानने के लिए प्रयोगशालाओं में ले जाया गया। अपने मुख्य भाषण में डॉ. तेज प्रताप, कुलपति,. एपी गोयल शिमला विश्वविद्यालय और पूर्व कुलपति कृषि विश्वविद्यालय और शेरे कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय, श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) ने जैविक कृषि के परिप्रेक्ष्य और भविष्य की रणनीतियों पर प्रकाश डाला। डॉ. तेज प्रताप ने कहा कि आज की परिस्थितियों को देखते हुए यह आवश्यक है कि स्वास्थ्य और प्रदूषण जैसी समस्याओं से निजात पाई जा सके। इसके लिए जैविक कृषि की ओर अग्रसर होना होगा। इसके लिए मुख्यतः चार प्रकार की जैविक कृषि, जिसमें ओमा, बैदिक, प्राकृतिक और इको फार्मिंग को अपनाना होगा। जैविक कृषि में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग सहायक सिद्ध हो सकता है। वर्तमान में जैविक कृषि का भारत में कुल व्यवसाय 0.3 प्रतिशत है, जबकि वैश्विक स्तर पर 1 प्रतिशत है। इससे लगता है कि हमारे उद्यामियों एवं किसानों के लिए इसमें स्वर्णिम भविष्य है। इस समारोह की अध्यक्षता प्रतिष्ठित वैज्ञानिक प्रोफेसर अनुपम वर्मा, एडजंक्ट प्रोफेसर, पादप विषाणु उन्नत केंद्र, आईएआरआई, नई दिल्ली और आईएनएसए के पूर्व उपाध्यक्ष ने की थी। इस अवसर पर उन्होंने प्राचीन भारत की सीखने की कला के शानदार आधार को याद दिलाया। उन्होंने हरित क्रांति और देश के स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार के लिए शोध एवं विकास संगठनों के योगदान की सराहना की। उन्होंने जैविक कृषि की बाधाओं जैसे कि कृषि उत्पादों के प्रमाणीकरण के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने अतिथियों, छात्रों, शिक्षकों और वैज्ञानिकों को संस्थान द्वारा क्षेत्र के जैवसंसाधनों के सतत उपयोगों के माध्यम से यहां की आर्थिकी को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण शोध एवं विकास योगदान पर प्रकाश डाला। संस्थान ने कुछ महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों को उद्योगों के स्तर पर उत्पादन के लिए हस्तांतरित कर दिया है।

स्वास्थ्य व प्रदूषण जैसी समस्याओं का समाधान है जैविक कृषि

पालमपुर : राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर आई.एच.बी.टी. में उपस्थित मुख्यातिथि व अन्य वैज्ञानिक गण। (भृगु)

आई.एच.बी.टी. में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन

पालमपुर, 11 मई (भृगु): राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर सी.एस.आई.आर. हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान में समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि ए.पी. गोयल शिमला विश्वविद्यालय के कुलपति और कृषि विश्वविद्यालय और शेर-ए-कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) के पूर्व कुलपति डा. तेज प्रताप ने जैविक कृषि के परिप्रेक्ष्य और भविष्य की रणनीतियों पर प्रकाश डाला। अपने संबोधन में डा. तेज प्रताप ने कहा कि आज की परिस्थितियों को देखते हुए यह आवश्यक है कि स्वास्थ्य और प्रदुषण जैसी समस्याओं से निजात पाई जा सके। इसके लिए जैविक कृषि की ओर अग्रसर होना होगा। डा. नरेश कुमार डीन डी.ए.वी. विश्वविद्यालय जालंधर एवं पूर्व प्रमुख मानव संसाधन विकास केंद्र सी.एस.आई.आर. ने विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं वैज्ञानिकों को भारत में प्रौद्योगिकी द्वारा नवोन्मेष को प्रोत्साहित करने और इसे बौद्धिक संपदा अधिकार के अंतर्गत पंजीकृत करने के लिए कहा।

सुगंधित गुलाब की अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग

पालमपुर में कार्यशाला के दौरान किसानों को बांटी जानकारी

■ कार्यालय संवाददाता, पालमपुर

सीएसआईआर हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर द्वारा शनिवार को सुगंध फसलों की खेती से किसानों की आय बढ़ाने विषय पर एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया।

चिन्माया संस्थान धर्मशाला के सहयोग आयोजित इस कार्यक्रम में धर्मशाला, नगरोटा, रैत तथा कांगड़ा ब्लॉक व जोगिंद्रनगर क्षेत्र से 50 किसानों ने भाग लिया, जिसमें महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार का मानना है कि हिमाचल प्रदेश में बंजर व खाली पड़ी जमीनों के उपयोग हेतु सुगंध फसलें उपयुक्त विकल्प हैं, जिनके द्वारा किसानों की आय दोगुनी की जा सकती है। सीएसआईआर हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान से परियोजना के नोडल अधिकारी डा. आरके सूद ने किसानों को अरोमा मिशन परियोजना के अंतर्गत किए जा रहे प्रयासों के बारे में अवगत करवाया। उन्होंने लघु किसानों को संगठित होकर व्यावसायिक खेती करने पर बल दिया, ताकि 200-300 कनाल क्षेत्र में सुगंध फसलों जैसे जंगली गैंदा, नींबू घास, सुगंधित गुलाब, सुगंध वाला आदि फसलों की खेती की जा सके व इन फसलों से तेल निकासी संयंत्र लगाया जा सके। डा. राकेश कुमार द्वारा किसानों को सुगंधित गुलाब की कृषि विधियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। सुगंधित गुलाब से गुलाब तेल, गुलाब जल, गुलाब कंकरीट व अब्सोलुट उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं, जिनकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में बारी मांग रहती है, जिनका वार्षिक उत्पादन 15 टन वर्ष और वार्षिक मांग 45 टन वर्ष है ।

इन उत्पादों को इत्र उद्योग, उच्च मूल्य सौंदर्य प्रसाधन, दवा उद्योग एचआईवी विरोधी, जीवाणु विरोधी पेय, खाने की चीजों में, मिष्ठान में, अरोमा थैरेपी में प्रोयोग में लाया जाता है। सुगंध फसलों की व्यावसायिक खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम सीएसआईआर अरोमा मिशन के तहत आयोजित किया गया। सीएसआईआर हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर दो-तीन वर्षों में 500-550 हेक्टेयर क्षेत्र में इन सुगंध फसलों का प्रसार व 50 तेल निकासी संयंत्र स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है।

दिव्य हिमाचल Sun, 22 April 2018
epaper.divyahimachal.com//c/28084107

हिमालय नेचुरल एंड हर्बल प्रोडेक्ट्स ने मार्केट में उतारी हिम प्योर ग्रीन कॉफी

कॉफी से मानसिक कमजोर बच्चों की मदद

■ कार्यालय संवाददाता, पालमपुर

पालमपुर स्थित हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के सहयोग से एक निजी कंपनी द्वारा बाजार में उतारी गई कॉफी की बिक्री से जहां उपभोक्ता स्वादिष्ट पेय का आनंद लेंगे, वहीं इससे मानसिक तौर से कमजोर बच्चों की मदद भी होगी।

> **“ संस्थान का उद्देश्य अपनी विकसित प्रौद्योगिकियों द्वारा युवा उद्यमियों को बढ़ावा देना है साथ ही उप क्रमों और उत्पादों को विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो कि स्वास्थ्यवर्धक, सस्ते और जनता के लिए व्यापक पैमाने पर लाभदायक हों**
>
> **डा. संजय कुमार**
>
> **निदेशक, सीएसआईआर-आईएचबीटी**

हिमालय नेचुरल एंड हर्बल प्रोडेक्ट्स ने सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के सहयोग से हिम प्योर ग्रीन कॉफी तैयार की है।

यह कॉफी ताजी अरेबिका कॉफी बींस से बिना रोस्ट किए तैयार की गई है। इन कॉफी बींस को विशिष्ट परिस्थितियों में प्रोसेस किया जाता है, ताकि एक समान कण प्राप्त हो सकें जो कि एंटी ऑक्सीडेंट से भरपूर होते हैं और यह मेटाबॉलिक सिस्टम को बेहतर करती है।

हिम प्योर ग्रीन कॉफी पूरी तरह से शुद्ध, किसी भी रासायनिक या प्रिजरवेटिव रहित होती है जिसका अपना प्राकृतिक स्वाद और रंग होता है। सीएसआईआर-आईएचबीटी के साथ हुए इस समझौते के अंतर्गत कंपनी प्रारंभ में अपने उत्पाद हिमाचल प्रदेश, पंजाब और नई दिल्ली में बेच सकती है। मार्केट में कॉफी उतार रही कंपनी ने घोषणा की है कि प्रत्येक बॉक्स की बिक्री से एक रुपए की राशि को जम्मू एवं कश्मीर के रोटरी इन्नरव्हील होम के माध्यम से मानसिक रूप से मंद बच्चों की सहायता के लिए प्रदान किया जाएगा।

दिव्य हिमाचल Wed, 11 April 2018
epaper.divyahimachal.com//c/27782045

हिम प्योर ग्रीन कॉफी अब बाजार में

पालमपुर, 10 अप्रैल (भृगु) : हिमालय नैचुरल एंड हर्बल प्रोडक्टस ने सी.एस.आई.आर. हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर के सहयोग से हिम प्योर ग्रीन कॉफी तैयार की। इस हिम प्योर ग्रीन कॉफी का लोकार्पण मंगलवार को किया गया। यह कॉफी ताजी अरेबिका कॉफी बीन्स से बिना रोस्ट किए तैयार की गई है। सी.एस.आई.आर. हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने कहा कि हमारा उद्देश्य अपनी विकसित प्रौद्योगिकी के द्वारा युवा उद्यमियों को बढ़ावा देना है।

पंजाब केसरी
ई-पेपर
Wed, 11 A
epaper.pu

Green coffee launched

Palampur: Himalaya Natural & Herbal Products, Palampur, has launched green coffee with technology support of CSIR-Institute of Himalayan Bio-resource Technology, Palampur. Green coffee is processed from fresh Arabica coffee-beans without undergoing the process of roasting. The Him Pure Green Coffee is pure, free from any chemical or preservative and has its natural flavour and colour. Under the signed agreement with the CSIR-IHBT, the company will market the product in Himachal Pradesh, Punjab and New Delhi. oc

The Tribune
(Himachal Edition)
Wed
epa

आइएचबीटी ने लांच की वजन घटाने वाली हिम प्योर कॉफी

मैसर्ज हिमालय नेचुरल एंड हर्बल प्रोडक्ट्स कंपनी से किया एमओयू साइन, शुरू में हिमाचल, पंजाब व दिल्ली में होगी उपलब्ध

जागरण संवाददाता, पालमपुर : अब कॉफी भी वजन कम करने में मदद करेगी। काउंसिल ऑफ साइंटिफिक इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआइआर) के इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन बायोरिसोर्स टेक्नोलॉजी (आइएचबीटी) पालमपुर ने कॉफी के बीजों से एक ऑर्गेनिक कॉफी हिम प्योर तैयार की है।

आइएचबीटी में हिमालय नेचुरल एंड हर्बल प्रोडक्ट्स कंपनी के सदस्यों के साथ एमओयू साइन करने के दौरान उपस्थित संस्थान के निदेशक व अन्य

इस कॉफी की खास बात यह है कि इसमें एंटीऑक्सीडेंट ग्रीन टी के मुकाबले अधिक होते हैं। सोमवार को इसका एमओयू मैसर्ज हिमालय नेचुरल एंड हर्बल प्रोडक्ट्स के साथ किया गया। इसके साथ ही इसे लांच भी कर दिया गया। हिम प्योर कॉफी को तैयार करने के लिए कॉफी के बीजों का प्रयोग किया गया है। इनको रोस्ट करके इसे तैयार किया गया है तथा किसी तरह का कोई कैमिकल या अन्य पदार्थ इस्तेमाल नहीं किया गया है। यह मेटाबॉलिक सिस्टम को बेहतर करती है। हिम प्योर ग्रीन कॉफी शुद्ध, किसी भी रासायनिक या प्रिज़रवेटिव रहित है। इसका अपना प्राकृतिक स्वाद और रंग है। समझौते के तहत कंपनी प्रारंभ में अपने उत्पाद हिमाचल प्रदेश, पंजाब और दिल्ली में बेच सकती है।

> हमारा उद्देश्य अपनी विकसित प्रौद्योगिकियों से युवा उद्यमियों को बढ़ावा देना है। हम उन उत्पादों को विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो स्वास्थ्यवर्धक, सस्ते और जनता के लिए व्यापक पैमाने पर लाभदायक हो। उन्होंने कहा कि वजन कम करने में यह कॉफी महत्वपूर्ण रोल अदा करेगी।
>
> **-संजय कुमार,** निदेशक आइएचबीटी

हर डिब्बा बिकने पर दिव्यांगों को जाएगी मदद

मैसर्ज हिमालय नेचुरल एंड हर्बल प्रोडक्ट्स के उदय ने बताया कि कॉफी का प्रत्येक बॉक्स बिकने पर उसका एक रुपया दिव्यांग बच्चों को जाएगा। रोटरी इनरव्हील होम के सहयोग से यह राशि मानसिक रूप से दिव्यांग बच्चों को दी जाएगी। उदय ने बताया कि हमारा प्रयास सामाजिक सरोकार निभाने के लिए है।

आयुर्वेद कॉलेज पपरोला में राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

141 शोध पत्र पढ़े

हिमाचल दस्तक। बैजनाथ

राजीव गांधी राजकीय स्नातकोत्तर आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय पपरोला के सभागार में चल रही आयुर्वेद एवं जीर्ण व्याधियां विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शनिवार को संपन्न हुई। इस मुख्यातिथि डायरेक्टर ऑफ आयुर्वेदा डॉ. आरके पुर्थी ने किया कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलित, धनवंतरी पूजन तथा छात्राओं द्वारा धन्वंतरी वंदना से की गई।

◆ शोध पत्र में सीएसआईआर पालमपुर की पल्लवी शर्मा रही अव्वल

मुखयातिथि डायरेक्टर ऑफ आयुर्वेदा डॉ. आरके पुर्थी को प्रधानाचार्य प्रोफेसर वाई के शर्मा द्वारा पुष्प गुच्छ, शॉल, टोपी तथा स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया गया। संगोष्ठी में 16 राज्यों से आए आयुर्वेद शोधकर्ता एवं विशेषज्ञों ने लगभग 141 के करीब शोध, 34 पोस्टर तथा 14 केसेज पढ़े। मुख्य अतिथि ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले सम्मेलनों से हमें बहुत सीख मिलती है। उन्होंने छात्रों, प्रोफेसरों तथा चिकित्सको से आग्रह किया कि वे आयुर्वेदिक पद्धति को प्राथमिकता दें तथा आयुर्वेदिक मेडिसन से ही रोगियों का निदान करें। शोध पत्र में प्रथम

आयुर्वेद एवं जीर्ण व्याधियां विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शनिवार को संपन्न हुई।

सीएसआईआर पालमपुर की पल्लवी शर्मा, द्वितीय बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से स्वाति सिंह तथा तृतीय राजीव गांधी राजकीय स्नातकोत्तर आयुर्वेद महाविद्यालय पपरोला की कविता शर्मा रही।

उन्हें श्रीमति विमला देवी मैमोरियल अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य प्रोफेसर वाईके शर्मा, निदेशक एनआईए जयपुर डॉ संजीव शर्मा, डॉ. बीएल मेहरा, आरगनाजिंग सेक्रेटरी डॉ. राकेश शर्मा, प्रोफेसर नरेश शर्मा, प्रोफेसर विजय चौधरी डॉ. राजेश सूद, प्रोफेसर अश्विनी उपाध्याय तथा अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

अवार्ड
गई हैं,
ा गया।
क्षेत्र में
का कई

के तौर पर केंद्रीय रेल एवं कोयला मंत्री पीयूष गोयल व केंद्रीय मंत्री विजय गोयल (मिनिस्टर ऑफ स्टेट, पार्लियामेंटरी अफेयर्स एंड स्टेटिक्स एंड प्रोग्राम इंपलीमेंटेशन) शिरकत करेंगे।

सोलन ने हमीरपुर, सिरमौर ने चंबा हराया। मैन्स प्रतियोगिता में शिमला ने कांगड़ा को 3 -0 से हराया। जबकि, सोलन ने मंडी को भी 3-0 से परास्त किया। वूमेन में सिरमौर ने शिमला और सोलन ने मंडी को

हराया।
सिरमौर
सिरमौर
सिरमौर
अरिहंत
जैन ने

ोर्ट
र्के
ी
ा

की ओर से
अनुसार
ईकोर्ट में
युक्त किया

कोर्ट में ही
पद पर
ा के तहत
अधिकारी
है। वह
सलेटर कार्य
ाहक मुख्य
से जारी इस
ार इन दोनों
मित तौर पर
त्ति प्रदान की

पल्लवी के शोधपत्र को पहला स्थान

बैजनाथ(कांगड़ा)। राजीव गांधी आयुर्वेदिक स्नातकोत्तर शिक्षण संस्थान पपरोला में जीर्ण व्याधियां विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हुआ।

समापन समारोह में आयुर्वेद विभाग के निदेशक डा आर परुथी ने कहा कि हमें आयुर्वेद पर विशेष ध्यान देना चाहिए। प्रकृति ने बहुत सी जड़ी-बूटियां प्रदान की है और हम इन पर शोध करके आयुर्वेद को बढ़ावा दें सकते हैं । उन्होंने कहा कि दवाई ही रोग का निदान नहीं है। संतुलित दिनचर्या से रोगों पर अंकुश लगाया जा सकता है। उन्होंने एलोपैथी दवाइयों के प्रयोग को कम करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद को प्रदेश के स्कूलों से संबंध करके छात्रों को जागरूक करने के साथ-साथ स्कूल में हर्बल गार्डन की स्थापना की जाएगी। संगोष्ठी में देश भर से आए 141 प्रतिभागियों ने शोधपत्र और 14 केस व 34 पोस्टर पेश किए। शोधपत्र प्रतियोगिता में सीएसआईआर की पल्लवी शर्मा ने पहला, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्मृति सिंह ने दूसरा व राजीव गांधी स्नातकोत्तर शिक्षण संस्थान पपरोला कविता शर्मा ने तृतीय स्थान हासिल किया।

इस मौके पर राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर के निदेशक डा संजीव शमार, ओएसडी आयुर्वेद दिनेश, प्रिंसिपल डा वाईके शर्मा, डा वीएल मेहरा उपस्थित रहे। ब्यूरो

रेणुक

ददाहू (
देवताओं
गया। रेणु
हाजिरी भ
इसमें प्रशा
लाने देवस्
के लिए तह
सिंह को दे
मंदिर के लि
अशोक पंव
नायब तहसी
जाएंगे। मह
किया गया

COURT OF HIMACHAL PRADESH AT SHIMLA
CE OF THE OFFICIAL LIQUIDATOR
Co. P. NO. 2 of 2002
OMPANIES ACT, 1956

विक्रमादित्य पर झूठी पोस्ट की

IN THE
IN MATTE
IN THE MA
ADVANCE
DOUBLLE
In pursuanc
15 of 2003.
Plant & Mac
(IN LIQN) s
Solan H.P.
particulars

LOT NO.	DE
1.	La Bu

अब राशन के डिपुओं में मिलेंगे स्टीविया उत्पाद

मधुमेह के रोगी अब बिना डर खा सकेंगे मीठा

विनोद राणा

पालमपुर (कांगड़ा)।

आईएचबीटी की ओर से मुधमेह रोगियों के लिए तैयार किए स्टीविया उत्पाद अब सस्ते राशन के डिपुओं और लोकमित्र केंद्रों में भी उपलब्ध रहेंगे। शुगर से पीड़ित व्यक्ति इन उत्पादों से अब आसानी से मीठे का स्वाद ले सकेंगे।

इसके लिए जल्द ही हिमप्योर तरल स्टीविया प्रोडक्ट बाजार में उपलब्ध हो जाएगा। आईएचबीटी की तकनीक से तैयार किए इस प्रोडक्ट को मैसर्ज हिमालय नेचुरल एवं हर्बल प्रोडक्ट कंपनी बंदला ने बनाया है। इस उत्पाद को आईएचबीटी के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने हिमालय नेचुरल एवं हर्बल प्रोडक्ट के अधिकारियों के निदेशक और उप निदेशक आशीष चिबंड़ के साथ मिलकर लांच किया गया है।

हिमप्योर तरल स्टीविया के बाजार में उतरने से मधुमेह के रोगी इसका आसानी से उपयोग कर सकते हैं। यही नहीं कंपनी इसे गांवों में सस्ते राशन और लोक मित्र केंद्रों में भी उपलब्ध करवाएगी।

यह प्रोडक्ट मधुमेह रोगियों के साथ, हाई ब्लड प्रेशर और मोटापा कम करने में भी अधिक लाभदायक होगा। इसके निर्माण में किसी भी

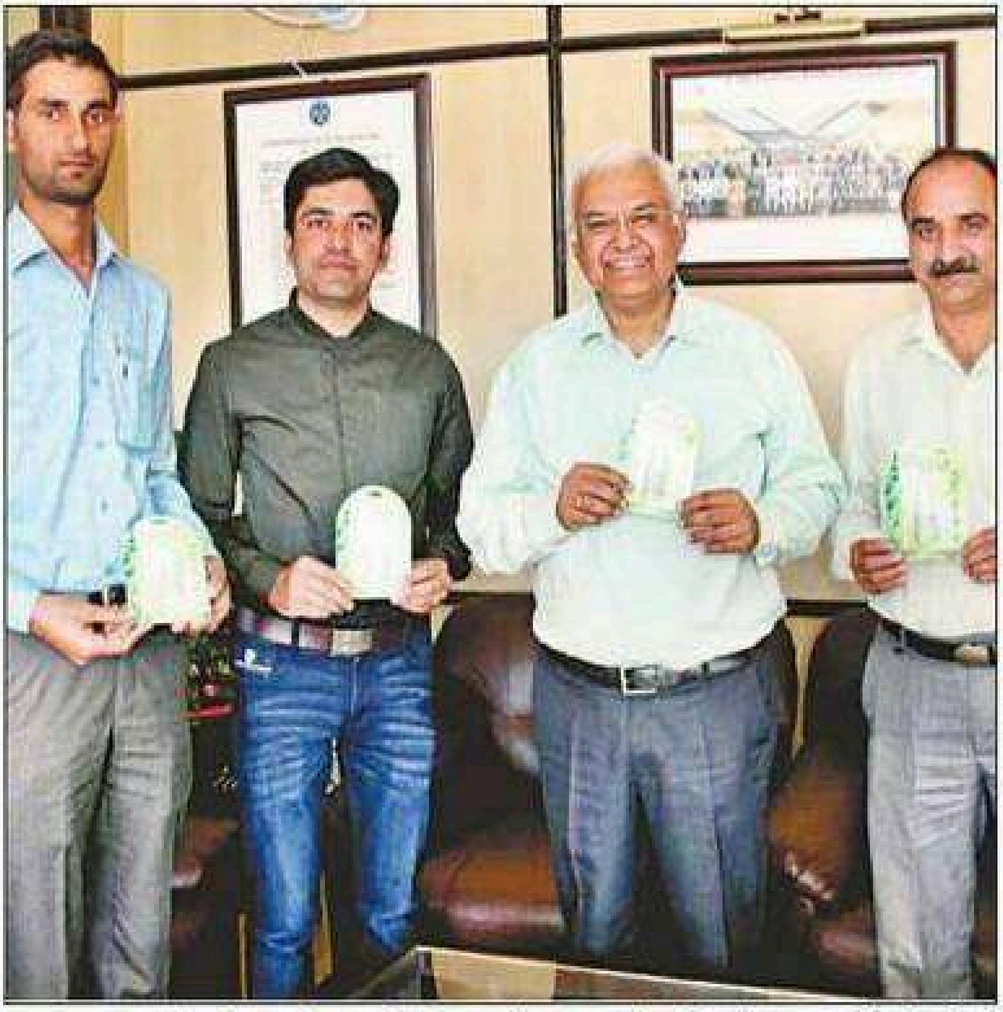

पालमपुर के बंदला स्थित हिमालय नेचुरल एवं हर्बल प्रोडक्ट की ओर से तैयार मधुमेह नाशक स्टीविया को लांच करते उप निदेशक आशीष चिंबड़।

मोटापा, हाई ब्लड प्रेशर के से भी मिलेगी निजात

रसायन का उपयोग नहीं किया गया है। यह पूरी तरह से प्राकृतिक उत्पाद है, जो आज के समय की मांग है।

यह उत्पाद अस्पर्टेम, सुक्रलोज और सैक्रिन रहित है। मैसर्ज हिमालय नेचुरल एवं हर्बल प्रोडक्ट बंदला के निदेशक उदय सिंह और उपनिदेशक आशीष चिंबड़ ने बताया कि यह उत्पाद मधुमेह, उच्च रक्तचाप और मोटापा आदि के रोगियों के लिए राहत प्रदान करेगा। इसके उपयोग करने से भविष्य से भी इन बीमारियों से बचाव करेगा। उत्पाद का उपयोग चाय, पानी, खीर और मिठाई आदि में किया जा सकेगा।

सफलता सीएसआइआर आइएचबीटी के निदेशक ने लांच किया स्टीविया का तरल उत्पाद हिमप्योर

मधुमेह रोगी भी अब खा सकेंगे मीठा

जागरण संवाददाता, पालमपुर : मधुमेह यानी शुगर के रोगी भी अब मीठा खा सकेंगे। सीएसआइआर-आइएसबीटी ने स्टीविया का तरल उत्पाद हिमप्योर लांच किया है। इसका निर्माण सीएसआइआर की हरित प्रौद्योगिकी द्वारा किया गया है।

सीएसआइआर-आइएसबीटी (काउंसिल ऑफ साइंटिफिक इंडस्ट्रीयल रिसर्च इंस्टीट्यूट, हिमालयन बायोरिसोर्स टेक्नोलॉजी) के निदेशक डॉ. संजय कुमार, मै. हिमालयन नेचुरल एवं हर्बल प्रोडक्ट बंदला के उपनिदेशक उदय सिंह व आशीष चिंबड़ ने मंगलवार को इसे लांच किया। छह अक्टूबर को इसका एमओयू संबंधित कंपनी के साथ हुआ था। हिमप्योर के निर्माण में रसायन का प्रयोग नहीं किया गया है और इसे बनाने की विधि पूरी तरह प्राकृतिक है। उदय सिंह व आशीष चिंबड़ ने बताया कि इस उत्पादन को गांव-गांव तक पहुंचाया जाएगा। इसे राशन की दुकानों, लोक मित्र केंद्रों और अन्य दुकानों में उपलब्ध करवाया जाएगा। यह उत्पाद मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा आदि के रोगियों को राहत पहुंचाएगा। इसका इस्तेमाल करने वाले भविष्य में भी इन बीमारियों के शिकार होने से बचेंगे। शुरुआत में यह न्यूगल कैफे चौक स्थित कंपनी के कार्यालय मिलेगा।

पालमपुर में मंगलवार को स्टीविया के तरल उत्पाद हिम प्योर को लांच करते सीएसआइआर के निदेशक डॉ. संजय कुमार ● जागरण

18 एमएल की बोतल 150 रुपये दाम

स्टीविया के तरल उत्पाद की 18 मिलीलीटर की बोतल से मरीज को 500 ड्रॉप्स मिलेगी। इसका मूल्य 150 रुपये होगा। तरल का प्रयोग शुगर के मरीज चाय या अन्य किसी भी पेय पदार्थ में डालकर इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

क्या है स्टीविया

स्टीविया तुलसी के पत्तों की तरह होता है। इसमें गन्ने के मुकाबले 300 गुणा ज्यादा मिठास होती है। स्टीविया में ग्लाइकोसाइड की मात्रा अधिक होती है, जिस कारण यह मधुमेह और उच्च रक्तचाप के मरीजों के लिए लाभकारी है। यह दातों को भी कई बीमारियों से बचाता है।

शुगर-बीपी के रोगियों के लिए लिक्विड स्टीविया बाजार में

आईएचबीटी ने तकनीक को किया ट्रांसफर

हिमाचल दस्तक। पालमपुर

शुगर और बीपी जैसी बीमारियों से जूझने वाले रोगियों के लिए अब लिक्विड स्टीविया उपलब्ध होगा। इसे पालमपुर की ही फर्म द्वारा तैयार कर बाजार में उतारा है। पालमपुर की सीएसआईआर आईएचबीटी लैब ने इस तकनीक को तैयार कर उसे बंदला की मै. हिमालय नेचुरल एवं हर्बल प्रोडक्ट को ट्रांसफर किया है।

लिहाजा अब जिन पत्तियों को पहले शुगर और बीपी के रोगियों द्वारा खाया जाता था, उसे अब पीने के रूप में भी प्राप्त किया जा सकेगा। उल्लेखनीय है की कुछ समय पूर्व ही इन दोनों संस्थानों के बीच में समझौता पत्र को हस्ताक्षरित किया गया था। इसके बाद बंदला की मै. हिमालय नेचुरल एवं हर्बल प्रोडक्ट ने इसे तैयार कर लिया है। बहरहाल इसको लेकर आईएचबीटी के मीडिया इंचार्ज डॉ. आरके सूद ने कहा कि हिमप्योर तरल स्टीविया उत्पाद का शुभारंभ मंगलवार को डॉ. संजय कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर तथा उदय सिंह, निदेशक एंव आशीष चिंबड़, उप-निदेशक, मै. हिमालय नेचुरल एवं हर्बल प्रोडक्ट, बंदला, पालमपुर द्वारा किया गया। सीएसआईआर- आईएचबीटी, पालमपुर की हरित प्रौद्योगिकी द्वारा हिमप्योर तरल स्टीविया के उत्पाद का निर्माण मै. हिमालय नेचुरल एंव हर्बल प्रोडक्ट, बंदला, पालमपुर ने शुरू कर दिया है। हिमप्योर तरल स्टीविया की प्रौद्योगिकी सीएसआई आर-आईएचबीटी, पालमपुर द्वारा छह अक्तूबर, 2017 को मै. हिमालय नेचुरल एवं हर्बल प्रोडक्ट, बंदला, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश को हस्तांतरित किया गया था। इसके निर्माण में किसी भी रसायन का उपयोग नहीं और यह पूर्णतः प्राकृतिक उत्पाद है जो कि आज के समय की मांग है। यह उत्पाद अस्पर्टेम, सुक्रलोज और सैक्रिन रहित है। उदय सिंह, निदेशक एंव आशीष चिंबड़, उप-निदेशक, मै. हिमालय नेचुरल एंव हर्बल प्रोडक्ट, बंदला, पालमपुर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा की इस उत्पाद को गांव-गांव में राशन की दुकान, लोकमित्र केंद्र एवं दूसरी दुकानों द्वारा उपलब्ध करवाया जाएगा। यह उत्पाद मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा आदि के रोगियों के लिए राहत प्रदान करेगा और इसके उपयोग करने वालों को भविष्य में इन बीमारियों के शिकार होने से बचाव का रक्षा कवच प्रदान करेगा। इस उत्पाद का उपयोग चाय, पानी, खीर, मिठाई आदि पदार्थों में किया जा सकेगा।

पालमपुर। *मंगलवार को हिमप्योर तरल स्टीविया उत्पाद का निदेशक डॉ. संजय कुमार ने शुभारंभ किया।*

हिमप्योर तरल स्टीविया बाजार में जल्द

लोकमित्र केंद्रों व राशन की दुकानों में करवाया जाएगा उपलब्ध

■ कार्यालय संवाददाता, पालमपुर

अनेक बीमारियों में लाभकारी माने जाने वाले तरल स्टीविया का उत्पादन शुरू हो गया है। हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी द्वारा तैयार किया गया यह प्रोडेक्ट शुगर व बीपी आदि के रोगियों के लिए काफी लाभदायक माना जा रहा है।

■ **शुगर-बीपी के रोगियों के लिए रामबाण होगा प्रोडेक्ट**

हिमप्योर तरल स्टीविया उत्पाद का उत्पादन शुरू हो गया है। सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक डा. संजय कुमार तथा मै. हिमालय नेचुरल एवं हर्बल प्रोडेक्ट के निदेशक उदय सिंह, निदेशक एवं उपनिदेशक आशीष चिंबड़ ने इसका आगाज किया। हिमप्योर तरल स्टीविया की प्रौद्योगिकी सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा मै. हिमालय नेचुरल एंव हर्बल प्रोडेक्ट को हस्तांतरित की गई है। इसके निर्माण में किसी भी रसायन का उपयोग नहीं और यह पूर्णतः प्राकृतिक उत्पाद है, जो कि आज के समय की मांग है। यह उत्पाद अस्पर्टेम, सुक्रलोज और सैक्रिन रहित है। उदय सिंह ने बताया कि इस उत्पाद को गांव-गांव में राशन की दुकान, लोकमित्र केंद्र एवं दूसरी दुकानों द्वारा उपलब्ध करवाया जाएगा। यह उत्पाद मधुमेह, उच्च रक्तचाप व मोटापा आदि के रोगियों के लिए राहत प्रदान करेगा और इसके उपयोग करने वालों को भविष्य में इन बीमारियों के शिकार होने से बचाव का रक्षा कवच प्रदान करेगा। इस उत्पाद का उपयोग चाय, पानी, खीर व मिठाई आदि पदार्थों में किया जा सकेगा।

जैव आर्थिकी को प्रोत्साहित और राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का लक्ष्य पूरा

पालमपुर : हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान में सी.एस.आई.आर. स्थापना दिवस पर स्मारिका का विमोचन करते मुख्यातिथि (इनसैट में) तथा इस अवसर पर उपस्थित स्कूली बच्चे व अन्य। (भृगु)

आई.एच.बी.टी. ने सी.एस.आई.आर. स्थापना दिवस समारोह मनाया

पालमपुर, 4 अक्तूबर (भृगु): वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का 76वां स्थापना दिवस समारोह परिषद की हिमाचल हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में मनाया गया। संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने बताया कि वर्ष के दौरान विभिन्न स्तरों पर व्यापक गतिविधियां हुईं। संस्थान ने उद्योगों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और सामाजिक उत्थान के लिए अपने प्रयासों को दिशा दी है। उपलब्धियों के कारण इस वर्ष संस्थान ने जैव आर्थिकी को प्रोत्साहित और राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के लक्ष्य को पूरा किया है। संस्थान ने सी.एस.आई.आर. के मिशन अरोमा परियोजना, कौशल विकास कार्यक्रम को सशक्त बनाने के लिए विशेषकर राष्ट्र के युवाओं के लिए इसमें अपने आप को शामिल किया है। साथ ही संस्थान सी.एस.आई.आर. के त्वरित गति के रूपांतरण परियोजना (फास्ट ट्रैक ट्रांशलेशन प्रोजैक्ट) में शामिल है जिसका उद्देश्य प्रयोगशाला से प्रक्षेत्र तक तीव्र गति से बढ़ते हुए 2 वर्ष के भीतर उद्योग एवं समाज को उत्पाद तैयार करके देना है। इस वर्ष प्रगति मैदान नई दिल्ली में आयोजित भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले और भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान मेले में संस्थान की प्रौद्योगिकी और शोध एवं विकास गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया। बड़ी संख्या में विद्यालयों और कॉलेज के छात्रों ने बहुआयामी वैज्ञानिक गतिविधियों को जानने के लिए संस्थान का भ्रमण किया। नवोन्मेष की संस्कृति के साथ हमारी समर्पित और कर्मनिष्ठ टीम समाज, उद्योग और पर्यावरण के लाभ के लिए राष्ट्रीय लक्ष्यों और मिशन का लगातार अनुसरण कर रही है। समारोह के मुख्यातिथि प्रो. एस.एस. हांडा, पूर्व निदेशक सी.एस.आई.आर.-भारतीय समवेत औषध संस्थान जम्मू ने औषधीय एवं संगध पौधे, स्वास्थ्यवर्द्धक उत्पादों का समृद्ध कोष, चुनौतियां एवं संभावनाएं विषय पर सी.एस.आई.आर. स्थापना दिवस संभाषण दिया। इस अवसर पर संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन तथा तकनीकी प्रकाशन स्टीविया एवं जिन्को तथा संस्थान की जैव संपदा पर एक पुस्तिका का विमोचन डा. हांडा ने किया। संस्थान की प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए पुष्प उत्पादक कर्ण भल्ला को सम्मानित किया गया। स्टाफ के बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिता में विजेताओं को मुख्यातिथि ने पुरस्कृत किया। रिसर्च स्कॉलर सेनिमान सीरीज में पूनम रोशन को प्रथम, दिपाशा भट्टाचार्जी को द्वितीय एवं संयुक्ता दलाल को तृतीय पुरस्कार संस्थान के निदेशक ने प्रदान किए। इस अवसर पर संस्थान ने एलुमनी पोर्टल और तकनीकी सेवा पोर्टल को भी जारी किया। इस अवसर पर निदेशक ने सितम्बर 2015 से सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों तथा संस्थान में 25 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले कर्मियों को भी सम्मानित किया। इस समारोह में दगोह, कंडबाड़ी व दयोल के स्थानीय विद्यालयों तथा जी.जी.डी.एस.डी. महाविद्यालय राजपुर के छात्रों के अतिरिक्त कृषि विश्वविद्यालय, आई.वी.आर.आई.,

पंजाब केसरी ई-पेपर Thu, 05 October 2017
epaper.punjabkesari.in//c/22662659

कार्यक्रम स्थापना दिवस पर सम्मानित किए किसान और कर्मचारी

सीएसआईआर ने मनाया 76वां स्थापना दिवस

हिमाचल दस्तक। पालमपुर

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) का 76वां स्थापना दिवस समारोह परिषद की हिमाचल प्रदेश में स्थित राष्ट्रीय प्रयोगशाला हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर में बुधवार को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सन् 1942 के इसी दिन विश्व की सबसे बड़ी वैज्ञानिक संस्था वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सीएसआईआर) की स्थापना हुई थी।

भारत में इस संस्था की 38 राष्ट्रीय प्रयोगशाला हैं, जिसमें लगभग 5000 वैज्ञानिक विज्ञान एवं तकनीक के विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य कर रहे हैं। सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर भी सीएसआईआर का हिमाचल प्रदेश में स्थित एकमात्र राष्ट्रीय संस्थान है, जिसका लक्ष्य सामाजिक, औद्योगिक तथा पर्यावरणीय लाभ के लिए हिमालयी जैवसंपदा सतत् उपयोग द्वारा जैव आर्थिकी को उन्नत करने के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करना है। संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने कार्यक्रम के दौरान सीएसआईआर की प्रमुख प्रयोगशालाओं एवं संस्थान के 2016-17 के वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया।

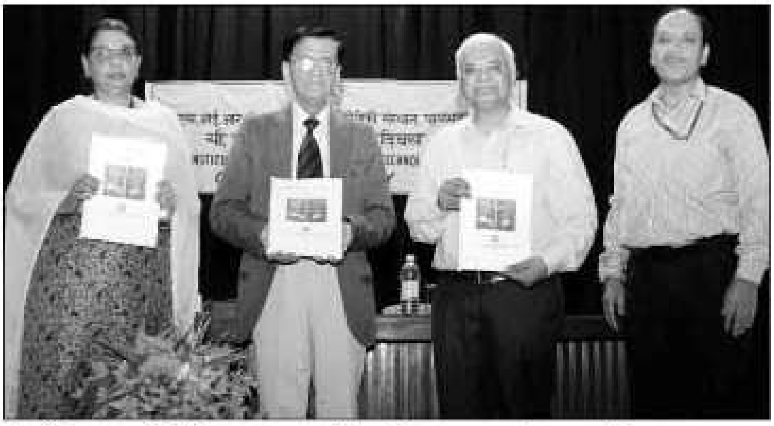

वैज्ञानिक *तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने मनाया 76वां स्थापना दिवस।*

उन्होंने बताया कि वर्ष के दौरान विभिन्न स्तरों पर व्यापक गतिविधियां हुई, संस्थान ने उद्योगों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और समाजिक उत्थान के लिए अपने प्रयासों को दिशा दी है। उपलब्धियों के कारण इस वर्ष संस्थान ने जैव आर्थिकी को प्रोत्साहित और राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के लक्ष्य को पूरा किया है। संस्थान ने सीएसआईआर के मिशन अरोमा परियोजना, कौशल विकास कार्यक्रम को सशक्त बनाने के लिए, विशेषकर राष्ट्र के युवाओं के लिए, इसमें अपने आप को शामिल किया है। साथ ही संस्थान सीएसआईआर के त्वरित गति के रुपांतरण परियोजना (फास्ट ट्रैक ट्रांसलेशन प्रोजेक्ट) में शामिल है, जिसका उद्देश्य प्रयोगशाला से प्रक्षेत्र तक तीव्र गति से बढ़ते हुए दो वर्ष के भीतर उद्योग एवं समाज को उत्पाद तैयार करके देना है। उन्होंने बताया कि इस अवधि के दौरान ग्रामीण सशक्तिकरण हेतु पुष्प खेती को बढ़ावा देना संस्थान की एक मुख्य उपलब्धि रही है। इसमें कैला लिलि की 'हिम सुमुख' एवं 'हिम सुरुप' की दो तथा जरबेरा की हिमसौम्या, हिमगौरव, हिमआभा, हिमअपूर्वा, हिमकीर्ति नामक पांच किस्मों को विकसित किया गया। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वीविज्ञान मंत्री डॉ. हर्ष वर्धन के संस्थान दौरे को प्रेरणादायक बताया। इस वर्ष प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले और भारतीय अंतरराष्ट्रीय विज्ञान मेले में संस्थान की प्रौद्योगिकियों और शोध एवं विकास गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया।

समारोह के मुख्यातिथि प्रो. एसएस हांडा, पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू ने 'औषधीय एवं संगध पौधे-स्वास्थ्यवर्धक उत्पादों का समृद्ध कोषः चुनौतियां एवं संभावनाएं' विषय पर सीएसआईआर स्थापना दिवस संभाषण दिया। उन्होंने विभिन्न पौधों के उपयोग तथा दवाइयों के निर्माण में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला।

पालमपुर : बुधवार को सीएसआईआर के स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोग

25 साल सेवाएं देने पर सम्मानित

सीएसआईआर में स्थापना दिवस की धूम, रिटायर्ड कर्मचारी भी नवाजे

▪ कार्यालय संवाददाता, पालमपुर

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) का 76वां स्थापना दिवस मनाया गया। सीएसआईआर हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर भी सीएसआईआर का हिमाचल प्रदेश में स्थित एकमात्र राष्ट्रीय संस्थान है। इसका लक्ष्य सामाजिक, औद्योगिक तथा पर्यावरणीय लाभ हेतु हिमालयी जैवसंपदा सतत उपयोग द्वारा जैवआर्थिकी को उन्नत करने के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करना है। संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया तथा सीएसआईआर की प्रमुख प्रयोगशालाओं एवं संस्थान के 2016-17 के वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि वर्ष के दौरान विभिन्न स्तरों पर व्यापक गतिविधियां हुईं, संस्थान ने उद्योगों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और समाजिक उत्थान के लिए अपने प्रयासों को दिशा दी है। उपलब्धियों के कारण इस वर्ष संस्थान ने जैव आर्थिकी को प्रोत्साहित और राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के लक्ष्य को पूरा किया है। संस्थान ने सीएसआईआर के मिशन अरोमा परियोजना, कौशल विकास कार्यक्रम को सशक्त बनाने के लिए व विशेषकर राष्ट्र के युवाओं के लिए इसमें अपने आप को शामिल किया है।

उन्होंने आगे बताया कि इस अवधि के दौरान ग्रामीण सशक्तिकरण हेतु पुष्पखेती को बढ़ावा देना संस्थान की एक मुख्य उपलब्धि रही है और कैला लिलि की 'हिम सुमुख' एवं 'हिम सुरुभ' की दो तथा जरबेरा की हिमसौम्या, हिमगौरव, हिमआभा, हिमअपूर्वा, हिमकीर्ति नामक पांच किस्मों को विकसित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन तथा तकनीकी प्रकाशन 'स्टीविया' एवं 'जिन्को' तथा संस्थान की जैवसंपदा पर एक पुस्तिका का विमोचन डा. हांडा ने किया।

संस्थान की प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए पुष्प उत्पादक श्री कर्ण भल्ला को सम्मानित किया गया। स्टाफ के बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिता में विजेताओं को मुख्यातिथि ने पुरस्कृत किया। रिसर्च स्कॉलर सेनिमार सीरीज में पुनम रोशन को प्रथम, दिपाशा भट्टाचार्जी को द्वितीय एवं संयुक्ता दलाल को तृतीय पुरस्कार संस्थान के निदेशक ने प्रदान किया। इस अवसर पर संस्थान ने एलुमनी पोर्टल और तकनीकी सेवा पोर्टल को भी जारी किया।

इस अवसर पर निदेशक महोदय ने सितंबर, 2015 से सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों तथा संस्थान में 25 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले कर्मियों को सम्मानित किया।

दिव्य हिमाचल
Thu, 05 October 2017
epaper.divyahimachal.com//c/22663031

वैज्ञानिक व औद्योगिक अनुसंधान परिषद के स्थापना दिवस पर बोले सीएसआइआर के निदेशक

विकसित की फूलों की पांच किस्में

जागरण संवाददाता, पालमपुर : वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) का 76वां स्थापना दिवस समारोह पालमपुर स्थित संस्थान में मनाया। इसमें पूर्व निदेशक सीएसआइआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान जम्मू डॉ. एसएस हांडा ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। इस दौरान संस्था के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने वर्ष 2016-17 की उपलब्धियों से अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि 26 सितंबर, 1942 को सीएसआइआर की स्थापना हुई थी। वर्ष 2016-17 में संस्थान ने जैव आर्थिकी को प्रोत्साहित और राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के लक्ष्य को पूरा किया है। संस्थान ने सीएसआइआर के मिशन अरोमा परियोजना, कौशल विकास कार्यक्रम को सशक्त बनाने के लिए, विशेषकर राष्ट्र के युवाओं के लिए इसमें अपने आप को शामिल किया है। ग्रामीण सशक्तिकरण के लिए पुष्प खेती को बढ़ावा देना संस्थान की एक मुख्य उपलब्धि रही है और कैला लिलि की 'हिम सुमुख' व 'हिम सुरुभ' की दो तथा जरबेरा की हिमसौम्या, हिमगौरव, हिमआभा, हिमअपूर्वा, हिमकीर्ति नामक पांच किस्मों को विकसित किया गया। इन किस्मों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 26 सितंबर, 2016 को 75वें स्थापना दिवस पर विमोचित किया था। मुख्य अतिथि डॉ. एसएस हांडा ने औषधीय, संगध पौधे-स्वास्थ्यवर्धक उत्पादों का समृद्ध कोष चुनौतियां एवं संभावनाएं विषय पर जानकारी दी। डॉ. हांडा ने 'स्टीविया' एवं 'जिन्को' तथा संस्थान की जैवसंपदा पर पुस्तिका का विमोचन भी किया। संस्थान की प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए पुष्प उत्पादक कर्ण भल्ला व एलुमिनी पोर्टल जारी कर पूर्व कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया। सीएसआइआर की पूरे भारत में 38 राष्ट्रीय प्रयोगशाला हैं, जिसमें लगभग 5000 वैज्ञानिक विज्ञान एवं तकनीक के विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य कर रहे हैं।

सीएसआइआर के स्थापना दिवस पर कार्यक्रम मे उपस्थित विद्यार्थी व अन्य ● जागरण

चित्रकला प्रतियोगिता में पूनम रोशन पहले, दिपाशा भट्टाचार्य दूसरे और संयुक्ता दलाल ने हासिल किया तीसरा स्थान

समारोह के दौरान रिसर्च स्कॉलर सेमिनार सीरीज विषय पर बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता करवाई। इसमें पुनम रोशन पहले, दिपाशा भट्टाचार्जी दूसरे और संयुक्ता दलाल तीसरे स्थान पर रही। इस मौके पर दगोह, कंडबाड़ी, दयोल के स्थानीय स्कूलों तथा जीजीडीएसडी महाविद्यालय, राजपुर के विद्यार्थियों के अतिरिक्त कृषि विश्वविद्यालय, आइवीआरआइ, आइजीएफआरआइ व अन्य विभागों के अधिकारी व अन्य उपस्थित रहे।

पौधों और जड़ी-बूटियों पर लोगों की जागरूकता जरूरी

अमर उजाला ब्यूरो

धर्मशाला।

प्रदेश के लोग यहां पाई जाने वाले विभिन्न पौधों और जड़ी-बूटियों के प्रति जागरूक नहीं हैं। इन विभिन्न प्रजाति के पेड़-पौधों और जड़ी-बूटियों का ऑनलाइन रिसोर्स ऐप डेवलप करने की जरूरत है, ताकि इनके फोटो को इनकी जानकारी सहित ऐप में अपलोड किया जा सके। यह बात धर्मशाला में आयोजित बायोलॉजिकल डायवर्सिटी एक्ट 2002 पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में आईएचबीटी पालमुपर के डायरेक्टर डॉ. संजय कुमार ने कही। उन्होंने कहा कि पेड़-पौधों और जड़ी-बूटियों के फोटो ऐप में अपलोड किए जाएं। इसके अलावा जिन पौधों के नाम गलत या डाले ही नहीं गए हैं, उन्हें इनके ज्ञाता व्यक्ति सही नाम डाल सकेंगे। उन्होंने कहा कि जैव विविधता पर नजर रखने के लिए कैमरों की सहायता ली जा रही है, लेकिन बदलते परिदृश्य में ड्रोन कैमरों की मदद भी इसमें ली जा सकती है।

वहीं, कार्यशाला के दौरान सेवानिवृत्त पीसीसीएफ विनय टंडन ने कहा कि वर्तमान में पेड़-पौधों के नामों को सूचिबद्ध करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जंगलों में खत्म हो रहे पेड़-पौधों और जड़ी बूटियों का भी सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाने वाली जड़ी-बूटियों के बारे में अधिकतर महिलाएं जागरूक होती हैं, ऐसे में जब भी ब्लॉक स्तर पर गठित समितियों को ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं से विशेषकर चर्चा करनी चाहिए। कार्यशाला में जिला कांगड़ा, चंबा, ऊना हमीरपुर जिलों के डीएफओ और 40 वन्य प्राणी विभाग के अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

दुर्लभ जड़ी-बूटियों का ज्ञान होना जरूरी : सत्यार्थी

हिमाचल प्रदेश स्टेट बायोडायवर्सिटी बोर्ड के मेंबर सेक्रेटरी आईएफएस कुनाल सत्यार्थी ने कहा कि दुर्लभ जड़ी-बूटियां होती हैं, जिनका ज्ञान अधिकारियों को भी नहीं होता, ऐसे में इनकी जानकारी सभी को होना जरूरी है। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 17 लाख 70 हजार जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों का नामांकन हुआ है। सत्यार्थी के अनुसार जड़ी-बूटियों की पहचान के लिए व्हटसऐप ग्रुप बनाया जा सकता है। इससे जब भी वन विभाग जड़ी-बूटियों को पकड़ता है तो इसे ग्रुप में फोटो सहित डालकर इसकी जानकारी उपलब्ध करवा सकता है, ताकि भविष्य में इनकी जानकारी प्राप्त की जा सके।

जड़ी-बूटियों की जानकारी के लिए बने एप

धर्मशाला में लगाई कार्यशाला में आइएचबीटी निदेशक ने हर व्यक्ति को जानकारी देने का किया आह्वान

संवाद सहयोगी, धर्मशाला : प्रदेश में उगने वाले विशेष पौधों और जड़ी-बूटियों की जानकारी प्रदेश के ही लोगों को नहीं है। इसका कारण यह है कि इनसे संबंधित जानकारी देने के लिए कोई उचित व्यवस्था नहीं है। जड़ी-बूटियों की जानकारी हर व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए ऑनलाइन रिसोर्स एप बनाने की जरूरत है, ताकि हर व्यक्ति अपने मोबाइल पर ही इसके बारे में पूरी जानकारी पा सके।

यह बात धर्मशाला में आयोजित बायोलॉजिकल डायवर्सिटी एक्ट-2002 पर आयोजित एकदिवसीय कार्यशाला में आइएचबीटी पालमपुर के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने कही। उन्होंने कहा कि ऐसा एप बनाने की जरूरत है, जिसमें फोटो और जानकारी अपलोड की जाए। इसके अलावा यदि किसी व्यक्ति को एप में अपलोड की गई जड़ी-बूटी के बारे में अधिक जानकारी हो तो उसकी प्रतिक्रिया के लिए भी

बायोलॉजिकल डायवर्सिटी एक्ट-2002 पर आयोजित कार्यशाला में उपस्थित वन विभाग के डीएफओ और अन्य ● जागरण

व्यवस्था होनी चाहिए। जैव विविधता पर नजर रखने के लिए कैमरों की सहायता ली जा रही है, लेकिन बदलते परिदृश्य में ड्रोन कैमरों की मदद भी इसमें ली जा सकती है। कार्यशाला के दौरान सेवानिवृत्त प्रिंसिपल चीफ कंजरवेटर फॉरेस्ट (पीसीसीएफ) विनय टंडन ने कहा कि वर्तमान में पेड़-पौधों के नामों को सूचीबद्ध करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जंगलों में खत्म हो रहे पेड़-पौधों और जड़ी-बूटियों का भी सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाने वाली जड़ी-बूटियों के बारे में अधिकतर महिलाएं जागरूक होती हैं। ऐसे में ब्लॉक स्तर पर गठित समितियों को ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं से विशेषकर चर्चा करनी चाहिए। हिमाचल प्रदेश जैव विविधता बोर्ड की कुनाल सत्यार्थी ने कहा कि दुर्लभ जड़ी-बूटियां होती हैं, जिनका ज्ञान अधिकारियों को भी नहीं होता। ऐसे में इनकी जानकारी सभी को होना जरूरी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 17 लाख 70 हजार जीव जंतुओं और पेड़-पौधों का नामांकन हुआ है।

कार्यशाला में जिला कांगड़ा, चंबा, ऊना व हमीरपुर जिलों के डीएफओ और 40 वन्य प्राणी विभाग के अधिकारी भी मौजूद रहे।

औषधीय पौधों की लिस्ट बनाना जरूरी

■ नगर संवाददाता, धर्मशाला

■ जैव विविधता अधिनियम पर कार्यशाला में उठा मुद्दा
■ जड़ी-बूटियों की पहचान के लिए बनाया जाना चाहिए व्हाट्सऐप ग्रुप

हिमाचल के वनों में पाए जाने वाले पेड़-पौधों के नामों को सूचिबद्ध करना आवश्यक है। जंगलों में खत्म हो रहे पेड़-पौधों व जड़ी-बूटियों का भी सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। लुप्त हो रहे पौधों व जड़ी-बूटियों का आकलन कर रिपोर्ट तैयार करना आवश्यक है। विशेषकर औषधीय पौधों की सूची तैयार करना बेहद आवश्यक है। गुरुवार को धर्मशाला में जैव विविधता अधिनियम 2002 पर आयोजित कार्यशाला के शुभारंभ सत्र की अध्यक्षता करते हुए सेवानिवृत्त पीसीसीएफ विनय टंडन ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाने वाली जड़ी-बूटियों के बारे में अधिकतर महिलाएं जागरूक होती हैं, जिसके चलते ब्लॉक स्तर पर गठित समितियों को ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं से विशेषकर चर्चा करनी चाहिए। इस कार्यशाला के दौरान स्टेट बायोडायवर्सिटी बोर्ड के मेंबर सेक्रेटरी आईएफएस कुनाल सत्यार्थी ने कहा कि जड़ी-बूटियों की पहचान के लिए व्हाट्सऐप ग्रुप बनाया जा सकता है। इससे जब भी वन विभाग द्वारा जड़ी-बूटियां पकड़ी जाती हैं, तो ग्रुप में उनकी फोटो डालकर उसके संबंध में जानकारी हासिल की जा सके। कई ऐसी दुर्लभ जड़ी-बूटियां होती हैं, जिनका ज्ञान अधिकारियों को भी नहीं होता, ऐसे में इनकी जानकारी सभी को होना जरूरी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 17 लाख 70 हजार जीव-जंतुओं व पेड़-पौधों का नामांकन हुआ है। उन्होंने एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि विश्व की आठ फीसदी जैव विविधता भारत में पाई जाती है। इस एकदिवसीय कार्यशाला में आईएचबीटी पालमपुर के डायरेक्टर डा. संजय कुमार ने कहा कि जैव विविधता पर नजर रखने के लिए कैमरों की सहायता ली जा रही है। जैव विविधता बोर्ड के प्रदेश परियोजना समन्वयक डा. एमएल ठाकुर, बोर्ड की निदेशक व सदस्य सचिव अर्चना शर्मा, बोर्ड के पीएसओ के कायस्था, राष्ट्रीय जैव विविधिता प्राधिकरण चेन्नई के परियोजना प्रबंधक डा. ईश्वर पुजार, शोधकर्ता मृदु टंडन, बोर्ड के सीनियर साईंटिफिक प्रोफेशनल डा. पंकज शर्मा ने जैव विविधिता अधिनियम 2002 के लाभों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

बिना अनुमति नहीं होगा जड़ी-बूटियों का उपयोग

- एक्ट की अवहेलना करने पर विदेशी को पांच और भारतीय को होगी दो वर्ष की कैद

हिमाचल दस्तक। धर्मशाला

धर्मशाला में आयोजित कार्यशाला में बहुमूल्य जैवसंपदा पर की चर्चा।

धर्मशाला में वीरवार को प्रदेश वन विभाग के जैवविविधता के तहत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें दूसरे प्रदेशों में बेची जा रही हिमाचल की बहुमूल्य जैवसंपदा पर चिंतन किया गया। प्रदेश जैवविविधता बोर्ड के संयुक्त सचिव कुनाल सत्यार्थी ने बताया कि किस प्रकार से प्रदेश की बहुमूल्य जड़ी-बूटियों को बाहरी राज्यों मे बेचा जा रहा है और बाहरी राज्य इन जड़ी-बूटियों से प्राप्त लाभ को स्वयं ही रख लेते हैं। इन जड़ी-बूटियों का उपयोग अब सरकार की आज्ञा के बिना नहीं किया जाएगा। इस एक्ट की अवहेलना करने वाले को सजा का प्रावधान किया गया है। इसके तहत विदेशियों को 5 साल व 10 लाख का जुर्माना, वहीं भारतीय नागरिकों को अवहेलना करने पर 2 साल की कैद व 5 लाख के जुर्माने का प्रावधान है। जड़ी-बूटियों को संरक्षण देने के लिए हिमाचल में पंचायत स्तर पर कमेटियां गठित की जा रही हैं। जैवविविधता एक्ट 2002 के अंतर्गत इसको संरक्षण देने पंचायत स्तर में फॉरेस्ट गार्ड को सेक्रेटरी घोषित किया जाएगा। ब्लॉक स्तर पर रेंजर अधिकारी को इसकी कमान सौंपी गई है। जिला वन अधिकारी को नाडल अधिकारी के तौर पर नियुक्त किया गया है। सभी जिला वन अधिकारियों को चलान काटने का अधिकार दिया गया है। अब इन जड़ी-बूटियों का उपयोग करने से पहले अब जैवविविधता प्रौद्योगिक बोर्ड को लिखित जौर पर सूचित करना पड़ेगा, तभी कोई भी कंपनी हिमाचल से इन बेश कीमती जड़ी-बूटियों को ले पाएगी। जड़ी-बूटियों से प्राप्त आर्थिक लाभ को जनता के साथ बांटना पड़ेगा और जैव प्रौद्योगिक बोर्ड इस पैसे को जड़ी-बूटियों के संरक्षण के लिए उपयोग करेगा। प्रदेश में यह एक्ट शुरू हो चुका है, जबकि कुछ कंपनियां इस एक्ट के तहत अपना पंजीकरण करवा चुकी हैं। कार्यशाला में हमीरपुर, कांगड़ा-चंबा, ऊना मंडल के सभी जिला वन अधिकारी तथा 10 जिला वन अधिकारी व 40 वन रेंजर अधिकारी, मुख्य अतिथि के तौर पर विनय टंडन पीसीसीएफ सेवानिवृत्त वन अधिकारी, डॉ. संजय कुमार, निदेशक आईएचबीटी पालमपुर, चन्नई से डॉ. ईश्वर पौजार सचिव राज्य जैवविविधता बोर्ड, कुनाल सत्यार्थी, डॉ. अर्चना, अनिल जोशी, डॉ. कौशल आदि मौजूद रहे।

शोध कार्य में 60 प्रतिशत तक साहित्यिक चोरी तो रद्द होगा पंजीकरण!

शिमला, 7 सितम्बर (अभिषेक) : अकादमिक शोध कार्य में साहित्यिक चोरी 60 प्रतिशत तक पाई गई तो उक्त शोधकर्त्ता का पंजीकरण तक रद्द हो सकता है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) ने साहित्यिक चोरी पर नकेल कसने के लिए जीरो टॉलरैंस नीति अपनाने का निर्णय लिया है ताकि शोध कार्यों में कट-पेस्ट की प्रथा को बंद किया जा सके। ऐसे में शोधकर्त्ता द्वारा शोध कार्य में साहित्यिक चोरी किए जाने को लेकर शोधकर्त्ता दोषी पाया जाता है तो वह किसी भी शोध कार्य को प्रकाशित नहीं कर पाएगा और उक्त शोधकर्त्ता किसी भी विद्यार्थी को गाइड नहीं कर पाएगा।

यू.जी.सी. ने साहित्यिक चोरी को रोकने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने प्रस्ताव तैयार किया है। उच्च शिक्षण संस्थानों में अकादमिक अखंडता और साहित्यिक चोरी की रोकथाम रैगुलेशन-2017 के नाम से तैयार किए गए इस ड्राफ्ट में साहित्यिक चोरी किए जाने पर सख्त कदम उठाए जाना प्रस्तावित किया गया है।

एकैडमिक शोध कार्य में साहित्यिक चोरी को रोकने के लिए तैयार किए गए ड्राफ्ट को लेकर 30 सितम्बर तक सुझाव मांगे हैं। सुझाव आने के बाद उन पर गौर करके ड्राफ्ट को फाइनल कर दिया जाएगा।

शिक्षण संस्थानों को एकैडमिक मिसकंडक्ट पैनल (ए.एम.पी.) गठित करने को भी कहा गया है ताकि साहित्यिक चोरी के आरोप लगने पर मामले की जांच की जा सके और उक्त पैनल जांच कर मामले की रिपोर्ट प्रेषित करे।

लो जनाब ! अब आलू करेगा मालामाल

टिशू कल्चर तकनीक से तैयार किया जाएगा बीज, होगा रोगमुक्त, हिमाचल सहित उत्तर प्रदेश व हरियाणा में भेजा जाएगा बीज

जागरण संवाददाता, पालमपुर : आलू की फसल को लगने वाले रोगों के कारण अब किसानों की मेहनत पर पानी नहीं फिरेगा। अब आलू बीज टिशू कल्चर तकनीक से तैयार किया जाएगा और यह रोगमुक्त होगा।

सीएसआइआर-आइएचबीटी (काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च-इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन बायो रिसोर्स टेक्नोलॉजी) ने टिशू कल्चर की तकनीक तैयार की है। इस तकनीक पर काम करने के लिए मैसर्ज धौलाधार बायोप्लांट के साथ समझौता किया है। इस तकनीक से आलू की किस्मों के रोगमुक्त पौधे तैयार हो सकेंगे। साथ ही उत्पादन भी काफी होगा। आमतौर पर किसानों को आलू की खेती के लिए जी3 और जी4 स्तर के बीजों की जरूरत होती है। यह स्तर जी2 से शुरू होते हैं और इसके लिए टिशू कल्चर तकनीक महत्वपूर्ण है। इस तकनीक से उच्च गुणवत्तायुक्त बीजों को प्राप्त किया जा सकता है। धौलाधार बायोप्लांट से संदीप शर्मा व ललित ने कुछ दिन पूर्व संस्थान का दौरा किया था और यहां टिशू कल्चर से आलू उत्पादन तकनीक में रुचि दिखाई थी। इस समझौते से किसानों को अच्छी गुणवत्तायुक्त आलू के बीज प्राप्त हो सकेंगे और इन्हें लगाकर किसान बाजार में फसल का बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकेंगे। मै. धौलाधार बायोप्लांट इन बीजों को पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में सप्लाई करेगा।

सीएसआइआर-आइएचबीटी पालमपुर में बुधवार को टिशू कल्चर तकनीक पर समझौते के दौरान संस्थान के निदेशक व अन्य • जागरण

क्या है टिशू कल्चर

टिशू कल्चर तकनीक से पहले लैब में पौधे के क्लोन तैयार किए जाते हैं और इन्हें छोटे-छोटे हिस्सों में बांटा जाता है। इसके बाद इन हिस्सों को प्रोटीनयुक्त पदार्थों में रखा जाता है। इससे पौधे बीमारियों से बचे रहते हैं।

नगरोटा, पठियार व मलां में होती है ज्यादा पैदावार

जिला कांगड़ा में नगरोटा बगवां, पठियार, मलां, हटवास व बलधर में आलू की पैदावार भारी मात्रा में होती है। लाहुल स्पीति में भी आलू तैयार किया जाता है। लाहुल के आलू को ही अधिकतर किसान बीज के रूप में इस्तेमाल करते हैं। इस बार 50000 क्विंटल से अधिक की पैदावार कांगड़ा जिले में हुई थी।

क्या आती हैं दिक्कतें

जिले में कोल्ड स्टोर न होने से किसानों को आलू रखने में दिक्कतें आती हैं। लोगों फसल को घरों में रख लेते हैं, लेकिन इसमें बीमारी लगनी आरंभ हो जाती है। टिशू कल्चर से तैयार बीज रोगों से लड़ने में सक्षम होता है और तैयार फसल को अधिक समय तक रखा जा सकेगा।

पालमपुर : सी.एस.आई.आर. की प्लेटिनम जुबली पर आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी के अंतिम दिन बच्चों को विज्ञान की नई तकनीकों के बारे में जानकारी प्रदान की गई। इस दौरान संस्थान के डायरैक्टर डा. संजय कुमार व आई.एच.बी.टी. के प्रवक्ता डा. राकेश सूद के साथ स्कूली बच्चे। (गौरव)

पंजाब केसरी ई-पेपर
Thu, 24 August 2017
epaper.punjabkesari.in//c/21577882

सीख

सीएसआईआर के प्लेटिनम जुबली टेक्नोफेस्ट को देख विद्यार्थी प्रसन्न, प्रदर्शनी भी निहारी

अरे वाह! साइंस में तो बहुत संभावनाएं हैं

■ जयदीप रिहान, पालमपुर

अरे वाह! विज्ञान में तो बहुत संभावनाएं हैं। यह उन बच्चों का कहना है जो पालमपुर स्थित सीएसआईआर संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनी देखने पहुंच रहे हैं। सीएसआईआर संस्थान में आयोजित किए जा रहे प्लेटिनम जुबली टेक्नोफेस्ट में पहुंच रहे अनेक विद्यार्थियों ने विज्ञान के क्षेत्र में ही अपना भविष्य बनाने की बात कही है। यहीं से उनमें आगे जाकर साइंस में ही भविष्य की संभावनाएं तलाशने का विचार आया है। केंद्रीय विद्यालय पालमपुर की जमा दो की छात्रा रिया ने बताया कि सीएसआईआर में आयोजित की जा रही प्रदर्शनी में कुछ ऐसे रोचक विषय भी उनके सामने आए हैं, जिनके बारे में अब तक उनको कम ही पता था। स्मृति और खुशबू ने बताया कि टेक्नोफेस्ट में साइंस के विभिन्न पहलुओं पर काफी लाभदायक जानकारी उनको मिली है। तुशार, उद्भव और वरुण ने बताया कि अंतरिक्ष एवं स्ट्रेटेजिक सेक्टर की जानकारी उनको भविष्य में बहुत काम आएगी। तीन दिवसीय प्रदर्शनी के दूसरे दिन राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला राजपुर, केवी होल्टा, विवेका फाउंडेशन भवारना, ग्रीन फील्ड नगरोटा, बतरा कालेज, जीएवी सल्याणा, गर्ल्ज स्कूल पालमपुर, जीजीडीएसडी कालेज राजपुर सहित करीब 12 शिक्षण संस्थानों के आठ सौ से अधिक बच्चों ने खाद्य एवं पोषण, कृषि एवं पुष्पखेती, जेनेरिक्स एवं स्वास्थ्य, रसायन एवं पेट्रोकेमिकल, बौद्धिक संपदा, ग्रामीण विकास, चर्म उद्योग सशक्तिकरण, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, पदार्थ, खनिज, खनन, ऊर्जा, मानव संपदा पोषण, इंजीनियरिंग एवं आधारभूत ढांचा, जल आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण जानकारी हासिल की। सीएसआईआर के निदेशक डा. संजय कुमार ने बताया कि सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं द्वारा विकसित वैज्ञानिक तकनीकी, प्रौद्योगिकी एवं उत्पाद के बारे में आम नागरिक विशेषकर छात्रों तक जानकारी पहुंचाई जा रही है।

शाला : 01892-222292 व्हाट्सऐप 94180-48488 ई-मेल dharamshala@divyahimachal.com ■ नगरोटा बगवां 94185-41200 ■ पालमपुर 94186-09595 ■ बैजनाथ 94181-43001 ■ नगर 94180-79591 ■ देहरा

सीएसआइआर में विज्ञान का चमत्कार देख रहे विद्यार्थी

जागरण संवाददाता, पालमपुर : काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्री रिसर्च (सीएसआइआर) इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन बायोरिसोर्स टेक्नोलॉजी पालमपुर में 75वीं वर्षगांठ पर राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का शुभारंभ सोमवार को हुआ।

आइएचबीटी में आयोजित प्रदर्शनी में जानकारी हासिल करते विद्यार्थी • जागरण

23 अगस्त तक चलने वाली इस प्रदर्शनी में देश भर में सीएसआइआर के स्थित संस्थानों में हुए शोध कार्यों के बारे में विद्यार्थियों को अवगत करवाया जाएगा। सोमवार को आरंभ हुई इस विज्ञान प्रदर्शनी में विभिन्न स्कूलों के लगभग हजार बच्चों ने विज्ञान की नई तकनीकों की जानकारी हासिल की। सीएसआइआर पालमपुर के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आरके सूद ने कहा 14 विभिन्न विषयों की प्रदर्शनी लगाई गई है। इस प्रदर्शनी के माध्यम से सीएसआइआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं की ओर से विकसित वैज्ञानिक तकनीकी, प्रौद्योगिकी एवं उत्पाद के बारे में आम नागरिक को जानकारी दी जा रही है। प्रदर्शनी में विज्ञान के विभिन क्षेत्रों में सीएसआइआर की उपलब्धियां दर्शाई गई हैं। टेक्नोफेस्ट मुख्य विषयों जैसे अंतरिक्ष एवं स्ट्रैटेजिक सेक्टर, खाद्य एवं पोषण, कृषि एवं पुष्पखेती, जेनेरिक्स एवं स्वास्थ्य, रसायन एवं पेट्रोकेमिकल, बौद्धिक संपदा, ग्रामीण विकास, चर्म उद्योग सशक्तीकरण, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, पदार्थ, खनिज, खनन, ऊर्जा, मानव संपदा पोषण, इंजीनियरिंग एवं आधारभूत ढांचा व जल पर प्रर्दशनी लगाइ गई है।

सरकारी स्कूलों के लिए बसों का प्रबंध

इस प्रदर्शनी में निजी स्कूलों के साथ सरकारी स्कूलों के बच्चे भी पहुंचे। इसके लिए सीएसआइआर की ओर से विशेष तौर बसों का प्रबंधन किया गया है। ये बसें स्कूलों से बच्चों को लाकर वापस स्कूलों में ही पहुंचा रही हैं। डॉ. सूद ने बताया कि हमारा मकसद है कि कोई भी बच्चा नई तकनीकों की जानकारी से वंचित न रहे। इसके लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है।

http://epaper.jagran.com/ePaperArticle/22-aug-2017-edition-Kangra-page_14-24542-7030-102.html

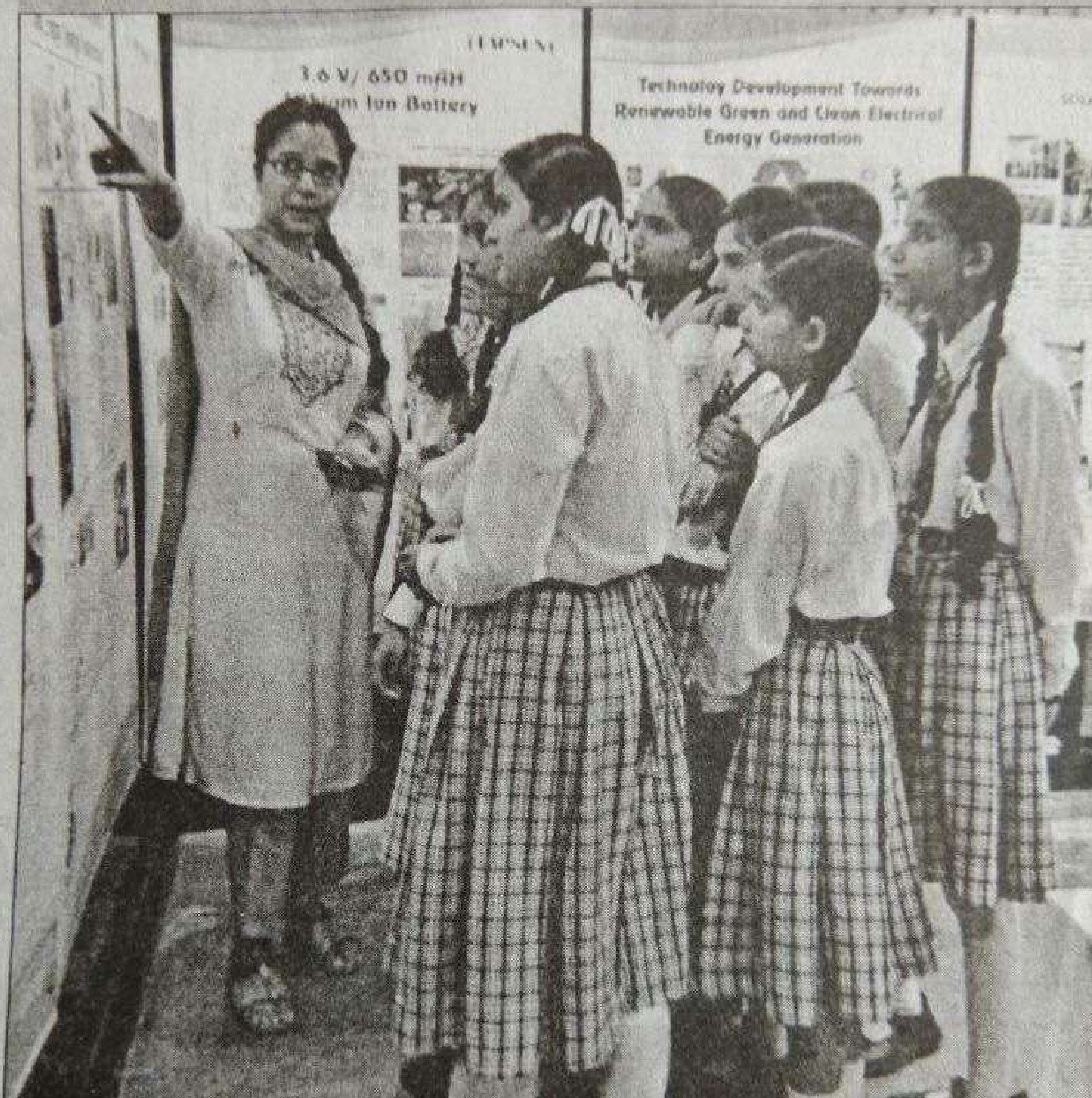

पालमपुर. सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर में लगी तीन दिवसीय वैज्ञानिक विषयों की प्रदर्शनी में जानकारी लेते स्कूली बच्चे।

छात्रों ने जानीं विज्ञान की बारीकियां

पालमपुर सीएसआईआर संस्थान में प्लेटिनम जुबली टेक्नोफेस्ट का आगाज

▪ कार्यालय संवाददाता, पालमपुर

▪ राष्ट्रीय प्रदर्शनी के पहले दिन पहुंचे 500 से अधिक विद्यार्थी

पालमपुर स्थित सीएसआईआर संस्थान में तीन राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनी का आगाज सोमवार को हुआ। पहले ही दिन विभिन्न शिक्षण संस्थानों के करीब पांच सौ से अधिक बच्चों ने सीएसआईआर पहुंच कर विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी प्राप्त की। सीएसआईआर (वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद) इस वर्ष अपनी 75वीं वर्षगांठ यानी प्लेटिनम जयंती वर्ष मना रही है और इस सिलसिले में आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की कड़ी में पालमपुर स्थित सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान में प्लेटिनम जुबली टेक्नोफेस्ट का आयोजन 21 से 23 अगस्त तक किया जा रहा है। प्रदर्शनी में युवाओं को अंतरिक्ष एवं स्ट्रेटेजिक सेक्टर, खाद्य एवं पोषण, कृषि एवं पुष्पखेती, जेनेरिक्स एवं स्वास्थ्य, रसायन एवं पेट्रोकेमिकल, बौद्धिक संपदा, ग्रामीण विकास, चर्म उद्योग सशक्तिकरण, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, पदार्थ, खनिज, खनन, ऊर्जा, मानव संपदा पोषण, इंजीनियरिंग एवं आधारभूत ढांचा व जल आदि विषयों पर अपनी जिज्ञासा शांत करने का अवसर मिल रहा है। प्रदर्शनी में विज्ञान के क्षेत्र में विभिन पहलुओं जैसे समुद्री से लेकर अंतरिक्ष विज्ञान तक, ट्रैक्टर से लेकर हवाई जहाज निर्माण तक, कृषि से लेकर जैव प्रौद्योगिकी, सगंध से औषध विकास तक, जल से जलवायु परिवर्तन व अन्य क्षेत्रों में सीएसआईआर की उपलब्धियां भी दर्शाई गई हैं, जो कि विद्यार्थियों को खूब आकर्षित कर रही हैं। सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं द्वारा विकसित वैज्ञानिक तकनीकी, प्रौद्योगिकी एवं उत्पाद के बारे में आम नागरिक विशेषकर छात्रों तक जानकारी पहुंचाई जा रही है। साथ ही छात्रों की विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाए जाने का प्रयास भी इसके माध्यम से किया जा रहा है।

दिव्य हिमाचल, कांगड़ा, पृ 2, 22 अगस्त 2017 (http://epaper.divyahimachal.com/1328170/Mera-kangra/Mera-Kangra#page/2/2

आईएचबीटी में जिज्ञासा कार्यक्रम

पालमपुर। सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में 10 से लेकर 14 जुलाई तक जिज्ञासा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. संजय कुमार, निदेशक आईएचबीटी ने किया। केंद्रीय विद्यालय के प्रधानाचार्य ललित कुमार ने छात्रों को संबोधित किया। प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डॉ. ओपी शर्मा ने मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में 11वीं कक्षा के विद्यार्थी जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, प्राकृतिक उत्पाद और सिंथेटिक रसायन शास्त्र के क्षेत्र में, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त वनस्पति संग्रहालय, सुदूर संवेदन और मानचित्रण सुविधाएं, निर्मल हाउस सुविधा आदि प्रयोगशालाओं का भ्रमण करेंगे। वैज्ञानिकों द्वारा स्कूल स्तर के विशेष प्रयोगों को डिजाइन किया गया है, ताकि बच्चों को नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक और वैज्ञानिक उपकरणों के लिए प्रशिक्षण दिया जा सके।

वैज्ञानिकों से टिप्स लेंगे विद्यार्थी

औद्योगिक अनुसंधान परिषद और केंद्रीय विद्यालय संगठन में समझौता

■ जयदीप रिहान, पालमपुर

औद्योगिक अनुसंधान परिषद और केंद्रीय विद्यालय संगठन के बीच हुए एक समझौते के तहत सीएसआईआर-आईएचबीटी जिज्ञासा कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। जिज्ञासा की पहल सीएसआईआर द्वारा प्लेटिनम जुबली समारोह के एक भाग के रूप में हुई। हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान में दस से 14 जुलाई तक जिज्ञासा कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

जिज्ञासा छात्रों-वैज्ञानिकों का परस्पर संपर्क कार्यक्रम है, जिस पर वैज्ञानिक, औद्योगिक अनुसंधान परिषद तथा केंद्रीय विद्यालय संगठन के बीच इसी साल छह जुलाई को एक समझौता हुआ था। पालमपुर स्थित संस्थान में कार्यक्रम का शुभारंभ सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक डा. संजय कुमार ने किया।

सप्ताह तक चलने वाले इस कार्यक्रम में 11वीं कक्षा के छात्रों को जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, प्राकृतिक उत्पाद और सिंथेटिक रसायन शास्त्र के क्षेत्र में, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त वनस्पति संग्रहालय, सुदूर संवेदन और मानचित्रण सुविधाएं, निमल हाउस सुविधा, न्यूट्रास्यूटिक्ल के लिए पायलट प्लांट, सगंध तेल और हर्बल निष्कर्षण जैसी अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं का भ्रमण करवाया जाएगा।

कार्यक्रम में शामिल किए मॉडल

छात्रों को आवासीय कार्यक्रम, वैज्ञानिक एक शिक्षक और शिक्षक एक वैज्ञानिक में, प्रयोगशाला गतिविधियां और ऑनसाइट परीक्षण, वैज्ञानिकों द्वारा स्कूलों का दौरा, विज्ञान और गणित क्लब, व्याख्यान शृंखला, छात्रों को शिक्षुता कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनियां, शिक्षक कार्यशाला, टिंकरिंग लैबोरेटरीज, राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की परियोजनाएं

"जिज्ञासा कार्यक्रम के अंतर्गत सीएसआईआर-आईएचबीटी विद्यार्थियों में नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों, हैंड ऑन ट्रेनिंग, प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के व्याख्यानों से वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना है। छात्रों को नवोन्मेषी परियोजनाओं को लेने और अपनी प्रतिभा को पूरा करने के लिए विज्ञान को एक करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा

डा संजय कुमार
निदेशक, सीएसआईआर

पहल | विद्यार्थी 14 जुलाई तक सीखेंगे वैज्ञानिक तजुर्बे, प्रयोगशालाओं का करेंगे भ्रमण, शुभारंभ पर सीएसआइआर निदेशक रहे मुख्यातिथि

आइएचबीटी पालमपुर में जिज्ञासा कार्यक्रम का शुभारंभ

संवाद सहयोगी, पालमपुर : हिमालय जैवसंपदा प्रोद्यौगिकी संस्थान (आइएचबीटी) में सोमवार से 14 जुलाई तक जिज्ञासा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जिज्ञासा छात्रों व वैज्ञानिकों का परस्पर संपर्क कार्यक्रम है। यह वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद और केंद्रीय विद्यालय संगठन में छह जुलाई को एक समझौते के तहत आयोजित किया जा रहा है। जिज्ञासा की पहल सीएसआइआर-आइएचबीटी की ओर से प्लेटिनम जुबली समारोह के एक भाग के रूप में हुई है। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के लिए आवासीय कार्यक्रम, वैज्ञानिक एक शिक्षक और शिक्षक एक वैज्ञानिक के रूप में, प्रयोगशाला गतिविधियां और ऑनसाइट परीक्षण, वैज्ञानिकों की ओर से स्कूल का दौरा, विज्ञान और गणित क्लब, व्याख्यानमाला, छात्रों के लिए शिक्षा कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनियां, शिक्षक कार्यशाला, टिंकरिंग लेबोरेट्रीज व राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की परियोजनाएं आदि

आइएचबीटी पालमपुर में आयोजित जिज्ञासा कार्यक्रम में भाग लेते विद्यार्थी ● जागरण

शामिल हैं। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान निदेशक डॉ. संजय कुमार ने किया जबकि केंद्रीय विद्यालय पालमपुर के प्रधानाचार्य ललित कुमार विशेष तौर से शामिल रहे। कार्यक्रम में वैज्ञानिक डॉ. ओपी शर्मा ने मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया। मुख्य अतिथि निदेशक डॉ. संजय कुमार ने बताया कि सप्ताह तक चलने वाले इस कार्यक्रम में 11वीं कक्षा के छात्रों को जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, प्राकृतिक उत्पाद और सिंथेटिक रसायन शास्त्र के क्षेत्र, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त वनस्पति संग्रहालय, सुदूर संवेदन और मानचित्रण सुविधाएं, एनिमल हाउस सुविधा, न्यूट्रास्यूटिकल के लिए पायलट प्लांट, सुगंधित तेल और हर्बल निष्कर्षण जैसी अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं का भ्रमण करवाया जाएगा।

स्कूल स्तर के विशेष प्रयोग होंगे डिजाइन

संस्थान के वैज्ञानिकों की ओर से स्कूल स्तर के विशेष प्रयोगों को डिजाइन किया जाएगा, ताकि बच्चों को नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक और वैज्ञानिक उपकरणों के कामकाज करने के लिए प्रशिक्षण दिया जा सके। इसका उद्देश्य छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करना है।

जिज्ञासा पैदा करेगी वैज्ञानिक दृष्टिकोण

जिज्ञासा कार्यक्रम के अंतर्गत आइएचबीटी विद्यार्थियों में नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों, हैंड ऑन ट्रेनिंग, प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के व्याख्यानों से वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करेगा। छात्रों को नवोन्मेषी परियोजनाओं को लेने और विज्ञान को करियर के रूप में अपनाने के लिए भी प्रेरित किया जाएगा।

सी.एस.आई.आर. में जिज्ञासा कार्यक्रम शुरू

पालमपुर : जिज्ञासा कार्यक्रम के अवसर पर स्कूली बच्चे व अन्य। (स.ह.)

पालमपुर, 10 जुलाई (स.ह.): सी.एस.आई.आर. हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान में 10-14 जुलाई तक जिज्ञासा कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। जिज्ञासा छात्रों-वैज्ञानिकों का परस्पर संपर्क कार्यक्रम है जिस पर वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद और केंद्रीय विद्यालय संगठन में 6 जुलाई को एक समझौता हुआ था। इस कार्यक्रम में छात्रों के लिए आवासीय कार्यक्रम, वैज्ञानिक एक शिक्षक और शिक्षक एक वैज्ञानिक के रूप में, प्रयोगशाला गतिविधियां और ऑनसाइट परीक्षण, वैज्ञानिकों द्वारा स्कूलों का दौरा, विज्ञान और गणित क्लब व्याख्यान शृंखला, छात्रों के लिए शिक्षुता कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनियां, शिक्षक कार्यशाला, टिंकरिंग लैबोरेटरीज व राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की परियोजनाएं मॉडल शामिल हुए। कार्यक्रम का शुभारम्भ डा. संजय कुमार निदेशक, सी.एस.आई.आर.-आई.एच.बी.टी. ने किया। ललित कुमार प्रधानाचार्य केंद्रीय विद्यालय होल्टा ने भी छात्रों को संबोधित किया। प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डा. ओ.पी. शर्मा ने मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया। छात्रों को नवोन्मेषी परियोजनाओं को लेने और अपनी प्रतिभा को पूरा करने के लिए विज्ञान को एक करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

पंजाब केसरी ई-पेपर
Tue, 11 July 2017
epaper.punjabkesari.in//c/20448589

आविराय-अमन प्रथम और अनमोल-इशान द्वितीय रहे।

पालमपुर में जिज्ञासा कार्यक्रम 14 जुलाई तक

पालमपुर (कांगड़ा)। सीएसआईआर-हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में 10 से 14 जुलाई तक जिज्ञासा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जिज्ञासा छात्रों-वैज्ञानिकों का परस्पर संपर्क कार्यक्रम है। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद और केंद्रीय विद्यालय संगठन में 6 जुलाई 2017 को इस संदर्भ में समझौता हुआ था। जिज्ञासा की पहल सीएसआईआर की ओर से प्लेटिनम जुबली समारोह के एक भाग के रूप में हुई थी। इसमें छात्रों के लिए आवासीय कार्यक्रम, वैज्ञानिक एक शिक्षक और शिक्षक एक वैज्ञानिक के रूप में, प्रयोगशाला गतिविधियां और ऑनसाइट परीक्षण, वैज्ञानिकों की ओर से स्कूलों का दौरा, विज्ञान और गणित क्लब समेत कई कार्यक्रम होंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने किया। केंद्रीय विद्यालय होल्टा के प्रधानाचार्य ललित कुमार छात्रों को संबोधित किया।

IHBT signs pact to extract catechins from tea leaves

OUR CORRESPONDENT

PALAMPUR, JULY 3

The CSIR-IHBT has signed an agreement with INDCOSERVE (The Tamil Nadu Small Tea Growers Industrial Cooperative Tea Factories Federation Ltd. at Coonoor, Nilgiris, Tamil Nadu), for transfer of technology for extraction of catechins from tea leaves.

Catechins are high value antioxidants having numerous health benefits. For extraction of one kg catechins, 40-50 kg fresh tea leaves are required and its price in international market is Rs 12,000-15,000. Catechins are 7-9 times more beneficial compared to commercial tea production.

INDCOSERVE has 16 industrial cooperative tea factories under regular production, catering to an area of 36,327 acres of 25,115 small tea growers with the main object to transform their socio-economic conditions. Currently commercial tea processing in the region has been adversely affected due to poor marketing.

The establishment of this enterprise will boost the economy of farmers involved in tea plantation. The CSIR-IHBT technology of catechins production is a green and sustainable process.

सीएसआइआर का हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान तैयार करेगा कैप्सूल

अब चाय दूर करेगी मोटापा

मुकेश मेहरा • पालमपुर

तमिलनाडु की कंपनी के साथ किया समझौता, चाय पत्ती में पाया जाने वाला एंटीऑक्सीडेंट कई बीमारियों के इलाज में है सहायक

लोगों की मनपसंद चाय अब मोटापा कम करने में भी सहायक सिद्ध होगी। जी हां! इसे साकार किया है पालमपुर स्थित काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआइआर) के हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (आइएचबीटी) ने। संस्थान चाय पत्ती में पाए जाने वाले केटेकिन पोषक तत्व को निकालकर उसके कैप्सूल बनाएगा और यह देशभर के बाजारों में उपलब्ध होंगे। इसके लिए संस्थान ने तमिलनाडु की एक कंपनी के साथ समझौता किया है। चाय पत्ती में पाया जाने वाला केटेकिन उच्च गुणवत्तापूर्ण एंटीऑक्सीडेंट होता है और ये कई बीमारियों का इलाज करने में कारगर है। हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान ने चाय पत्ती से केटेकिन निकालने के लिए इंडकोसर्व स्माल टी ग्रोअर इंडस्ट्रियल को-ऑपरेटिव टी फैक्ट्री फेडरेशन लिमिटेड कुन्नूर तमिलनाडु से समझौता किया है। संस्थान अपनी शोध और तकनीक के जरिये कंपनी में चाय पत्ती से केटेकिन को निकालकर उसका पाउडर बनाएगा और बाद में मोटापा कम करने वाले कैप्सूल तैयार किए जाएंगे।

हिमाचल में चाय उत्पादन

हिमाचल में 2300 हेक्टेयर में चाय उत्पादन होता है। 2100 हेक्टेयर कांगड़ा, 200 मंडी तो चंबा में मात्र छह हेक्टेयर क्षेत्र में चाय की खेती की जाती है।

300 मिलीग्राम का एक कैप्सूल 15 से 20 रुपये में

एंटीऑक्सीडेंट से बनने वाले कैप्सूल की मात्रा 300 मिलीग्राम तक रहती है और बाजार में इसकी कीमत 15 से 20 रुपये तक होती है। विशेषज्ञों की मानें तो अंतरराष्ट्रीय बाजार में 60 कैप्सूल का रेट 960 रुपये भारतीय करंसी के अनुसार है। तमिलनाडू में हिमालयन जैव प्रौद्योगिकी के सहयोग से तैयार होने वाले इन कैप्सूल की मार्केटिंग की भी संबंधित कंपनी ही करेगी।

एक किलो केटेकिन के लिए 50 किलो चाय पत्तियों की जरूरत

एक किलोग्राम केटेकिन को निकालने के लिए 50 किलोग्राम चाय पत्ती की आवश्यकता होती है और इसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में 12000 से 15000 रुपये कीमत है। चाय उत्पादन की बजाय केटेकिन उत्पादन सात से नौ गुणा लाभकारी है। मै. इंडकोसर्व के 16 सहकारी चाय कारखाने हैं और यह 25115 लघु चाय उत्पादकों की 36327 एकड़ क्षेत्र की जरूरत को पूरा कर रहा है। हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक संजय कुमार ने बताया कि केटेकिन निकालने की विधि से चाय उत्पादकों को अच्छे दाम मिलेंगे।

एंटीऑक्सीडेंट मोटापा कम करने में सहायक

विशेषज्ञों की मानें तो चाय पत्ती में पाए जाने वाले केटेकिन के एंटीऑक्सीडेंट मोटापे को कम करने और त्वचा निखारने के लिए काफी सहायक होते हैं। साथ ही कैंसर की रोकथाम में भी इन एंटीऑक्सीडेंट का प्रयोग होता है। यही नहीं शरीर में होने वाले छोटे-मोटे विकारों से भी यह निजात दिलाता है।

तमिलनाडु के चाय उत्पादकों के लिए संजीवनी बनेगी 'टी-केटेकिन'

आई.एच.बी.टी. व इंडकोसर्व तमिलनाडु में चाय केटेकिन उत्पादन हेतु समझौता

पालमपुर : हिमालय जैव प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर (सी.एस.आई.आर.) के निदेशक डा. संजय व (इंडकोसर्व के प्रबंध निदेशक अंबुज शर्मा समझौता पत्र हस्ताक्षरित कर आदान प्रदान करते हुए। (स.ह.)

पालमपुर, 1 जुलाई (स.ह.): विपणन समस्याओं से जूझ रहे तमिलनाडु के चाय उत्पादकों के लिए हिमालय जैव प्रौद्योगिकी संस्थान की टी-केटेकिन तकनीक संजीवनी बनने जा रही है। हिमालय जैव प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर (सी.एस.आई. आर.) पालमपुर ने तमिलनाडु स्माल टी ग्रोअर इंडस्ट्रियल को-अप्रेटिव टी फैक्टरी फैडरेशन लि. कुन्नूर, नीलगिरी, तमिलनाडु (इंडकोसर्व) के साथ चाय की पत्तियों से केटेकिन के निष्कर्षण की प्रौद्योगिकी को हस्तांतरित करने के लिए समझौता किया। हिमालय जैव प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर (सी.एस.आई. आर.)की केटेकिन उत्पादन प्रौद्योगिकी एक हरित और स्थायी प्रक्रिया पर आधारित है। केटेकिन एक उच्च गुणवत्तायुक्त एंटीऑक्सीडेंट है, जिसके कई स्वास्थ्यवर्धक लाभ हैं। एक किलोग्राम केटेकिन को निकालने के लिए 40-50 किलोग्राम ताजी चाय पत्तियों की आवश्यकता होती है और इसका अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मूल्य 12,000 से 15,000 रुपए है। विशेषज्ञों अनुसार चाय उत्पादन की अपेक्षा केटेकिन उत्पादन 7 से 9 गुणा लाभकारी है। एक आकलन के अनुसार चाय केटेकिन का वैश्विक बाजार 200 मीलियन डालर है तथा वर्ष 2020 तक इसकी मांग 7.4 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी। विदित रहे कि नियमित उत्पादन के लिए तमिलनाडु स्माल टी ग्रोअर इंडस्ट्रियल को-अप्रेटिव टी फैक्टरी फैडरेशन लि. कुन्नूर, नीलगिरी, तमिलनाडु (इंडकोसर्व) के 16 सहकारी चाय कारखाने हैं जो 25,115 लघु चाय उत्पादकों के 36,327 एकड़ क्षेत्र की आवश्यकता को पूरा कर रहा है। जिसका उद्देश्य उनका सामाजिक आर्थिक उत्थान करना है। इस उद्यम की स्थापना से तमिलनाडु के कुन्नूर क्षेत्र के चाय की खेती में लगे किसानों की आर्थिकी को सुधारने में सहायता मिलेगी। वर्तमान में विपणन समस्याओं के कारण इस क्षेत्र में चाय की प्रोसैसिंग प्रभावित हुई है जिसका सीधा प्रभाव लघु चाय उत्पादकों की आर्थिकी पर पड़ा है।

केटेकिन प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण पर समझौता

सीएसआईआर और तमिलनाडु की चाय कंपनी इंडकोसर्व के बीच एमओयू साइन

अमर उजाला ब्यूरो

पालमपुर (कांगड़ा)।

चाय पत्तियों की केटेकिन को लेकर सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर और तमिलनाडु की एक सहकारी चाय कंपनी के साथ समझौता हुआ है।

दोनों संस्थानों की बीच हुए समझौते से तमिलनाडु में चाय की खेती में जुटे किसानों की आर्थिकी सुधारने में मदद मिलेगी। यह समझौता सीएसआईआर और मैसर्ज इंडकोसर्व तमिलनाडु स्माल टी ग्रोअर इंडस्ट्रियल को-ऑपरेटिव टी फैक्टरी फेडरेशन लिमिटेड कुन्नूर, नीलगिरी, तमिलनाडु के साथ हुआ है। इसमें चाय की पत्तियों से केटेकिन के निष्कर्षण की प्रौद्योगिकी को हस्तांतरित किया जाएगा। सीएसआईआर के चाय विशेषज्ञ डॉ. आरके सूद ने बताया कि केटेकिन एक उच्च गुणवत्तायुक्त एंटी

स्वास्थ्य के लिए बेहतर माना जाता है केटेकिन

ऑक्सीडेंट है। इसके कई स्वास्थ्यवर्धक लाभ हैं। एक किलोग्राम केटेकिन को निकालने के लिए 40-50 किलोग्राम ताजी चाय पत्तियों की आवश्यकता होती है, जबकि इसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में 12,000 से 15,000 रुपये कीमत है। चाय उत्पादन की अपेक्षा केटेकिन उत्पादन सात से नौ गुणा लाभकारी है।

एक आकलन के अनुसार चाय केटेकिन का वैश्विक बाजार 200 मिलियन डालर है। वर्ष 2020 तक इसकी मांग 7.4 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी। नियमित उत्पादन के लिए मैसर्ज इंडकोसर्व के 16 सहकारी चाय कारखाने हैं, जो 25,115 लघु चाय उत्पादकों के 36,327 एकड़ क्षेत्र की आवश्यकता को पूरा कर रहे हैं। इसका उद्देश्य उनका सामाजिक आर्थिक उत्थान करना है। इस उद्यम की स्थापना से तमिलनाडु के कुन्नूर क्षेत्र में चाय की खेती में लगे किसानों की आर्थिकी को सुधारने में सहायता मिलेगी। सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर की केटेकिन उत्पादन प्रौद्योगिकी एक हरित और स्थायी प्रक्रिया पर आधारित है।

पालमपुर में शनिवार को आईएचबीटी और तमिलनाडु की कंपनी के बीच कांगड़ा चाय को लेकर एमओयू साइन करते अधिकारी।

तमिलनाडू की आर्थिकी सुधारेगा सीएसआईआर

■ कार्यालय संवाददाता, पालमपुर

■ कुन्नूर के चाय उद्योग के लिए संस्थान का इंड्कोसर्व के साथ हुआ समझौता

■ कैटेकिन उत्पादन के लिए होगी कसरत, चाय की पत्तियों से होगा निष्कर्षण

दक्षिण भारत के राज्य तमिलनाडू के कुन्नूर क्षेत्र के चाय की खेती में लगे किसानों की आर्थिकी सुधारने के लिए पालमपुर स्थित हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान ने हाथ बढ़ाया है। जानकारी के अनुसार सही मार्केटिंग के अभाव में इस क्षेत्र का चाय उद्योग संकट में चल रहा है। इस कड़ी में सीएसआईआर-आईएचबीटी संस्थान ने मै. इंड्कोसर्व (तमिलनाडू स्माल टी ग्रोअर इंडस्ट्रियल को-आपरेटिव टी फैक्टरी फेडरेशन लि. कुन्नूर, नीलगिरी, तामिलनाडू के साथ चाय की पत्तियों से कैटेकिन के निष्कर्षण की प्रौद्योगिकी को हस्तांतरित करने के लिए समझौता किया। जानकारी के अनुसार कैटेकिन एक उच्च गुणवत्तायुक्त एंटीऑक्सीडेंट है, जिसके कई स्वास्थ्यवर्द्धक लाभ हैं। एक किलोग्राम कैटेकिन को निकालने के लिए 40-50 किलोग्राम ताजी चाय पत्तियों की आवश्यकता होती है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारी मांग के चलते इसकी कीमत 12 से 15 हजार रुपए प्रति किलो मिल जाती है। चाय उत्पादन की अपेक्षा कैटेकिन उत्पादन सात से नौ गुना लाभकारी है। एक आकलन के अनुसार चाय कैटेकिन का वैश्विक बाजार दो सौ मीलियन डालर है तथा वर्ष 2020 तक इसकी मांग 7.4 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी। नियमित उत्पादन के लिए मै. इंड्कोसर्व के 16 सहकारी चाय कारखाने हैं, जो 25115 लघु चाय उत्पादकों के 36327 एकड़ क्षेत्र की आवश्यकता को पूरा कर रहा है, जिसका उद्देश्य उनका सामाजिक आर्थिक उत्थान करना है।

> सीएसआईआर-आईएचबीटी संस्थान ने तमिलनाडू के इंड्कोसर्व के साथ कैटेकिन उत्पादन के लिए समझौता किया है। इस उद्यम की स्थापना से तामिलनाडू के कुन्नूर क्षेत्र के चाय की खेती में लगे किसानों की आर्थिकी को सुधारने में सहायता मिलेगी
>
> **डा. संजय कुमार**
> निदेशक, सीएसआईआर

चीन-जापान सबसे बड़े सप्लायर

विश्वभर में अब तक कैटेकिन की मार्केट दस प्रतिशत के करीब है और इसमें से भी 75 फीसदी तक चीन और जापान सबसे बड़े सप्लायर हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में चाय से बने कैटेकिन्स की मांग लगातार बढ़ रही है और सीएसआईआर के वैज्ञानिकों की तकनीक काफी लाभदायक साबित होने जा रही है। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि कैटेकिन्स निकालने की तकनीक से चाय उद्योग को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

6 महीने फ्रेश रहेगी 'कांगड़ी धाम'

डिब्बा बंद राजमाह का मदरा; चने का खट्टा-रायता व उड़द कई दिन तक रहेंगे महफूज

▪ कार्यालय संवाददाता, पालमपुर

'रेडी-टू-ईट'

425 ग्राम का एक 130 रुपए में

▪ सीएसआईआर की बनाई धाम को असीम इंटरप्राइजेज ने मार्केट में उतारा

हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किए गए डिब्बाबंद कांगड़ी धाम के व्यंजन अब बाजार में उपलब्ध हो रहे हैं। सीएसआईआर संस्थान ने बैजनाथ स्थित निजी कंपनी के साथ एक समझौते के तहत तकनीक का हस्तांतरण किया था और कंपनी ने यह व्यंजन तैयार करने शुरू कर दिए हैं। 'रेडी-टू-ईट' कांगड़ी धाम के प्रमुख व्यंजनों को अब अलग-अलग स्थानों तथा लोगों के घरों तक पहुंचाने की तैयारी की है असीम एंटरप्राइजेज ने। पालमपुर के करीब घुग्गर पंचायत में संतोषी माता मंदिर के पास 'असीम एंटरप्राइजेज' ने काम करना शुरू कर दिया है। यहां पर कुछ अन्य उत्पादों के साथ प्रमुख तौर से कांगड़ी धाम के डिब्बाबंद पैक उपलब्ध करवाए जाएंगे। सीएसआईआर संस्थान ने कुछ समय पूर्व बिना प्याज-लहसुन व कम से कम तेल तथा मसालों द्वारा राजमाह का मदरा, चने का खट्टा, रायता और माह की दाल तैयार किए हैं जो कि करीब छह माह तक खराब नहीं होते हैं। अब घुग्गर स्थित असीम एंटरप्राइजेज ने यह स्वादिष्ट डिब्बाबंद व्यंजन जिला कांगड़ा में लोगों के घरों तक पहुंचाने की तैयारी की है। एमबीए तक शिक्षित असीम काफी समय तक निजी कंपनियों में काम करते रहे और अब उन्होंने अपना व्यवसाय शुरू किया है। जानकारी के अनुसार राजमाह का मदरा, चने का खट्टा, रायता और माह की दाल 425 ग्राम की डिब्बाबंद पैकिंग में उपलब्ध है और सबका दाम एक समान 130 रुपए प्रति पैक रखा गया है। असीम कहते हैं कि वह अपने ही क्षेत्र के उत्पाद को प्रोमोट करना चाहते थे और कांगड़ी धाम के माध्यम से उनको एक विकल्प मिल गया है।

दिव्य हिमाचल
Wed, 05 April 2017
epaper.divyahimachal.com//c/18085701

प्रोत्साहन मिले तो फिर छा जाएगी कांगड़ा चाय

चाय बागान कम होने से घट रहा उत्पादन, अधिक खर्च और कम कीमत होने से भी उत्पादक नहीं दिखा रहे दिलचस्पी

विनोद राणा

पालमपुर (कांगड़ा)।

1895 में लंदन में कांगड़ा चाय को मिला था गोल्ड मेडल

कभी 1895 में लंदन में गोल्ड मेडल हासिल कर चुकी कांगड़ा चाय को एक बार फिर प्रोत्साहन की जरूरत है। 1905 में आए भूकंप से चाय का कारोबार कम हो गया था। लेकिन, 1983 में पालमपुर में खुले सीएसआईआर संस्थान की बदौलत 1997 में एक बार फिर से उत्पादन बढ़ गया था। लेकिन, अब फिर चाय बागान के घटते क्षेत्र और चाय बागानों में कम हो रहे रुझान को लेकर उत्पादन मात्र 9 लाख क्विंटल ही रह गया है, जिसे 25 लाख क्विंटल तक ले जाने का लक्ष्य है।

कांगड़ा चाय के घटते कारोबार का कारण चाय उगाने में बढ़ता खर्चा और कीमतों में आई कमी भी है। यह देख चाय उत्पादक भी इसकी खेती से मुख मोड़ने लगे हैं। कांगड़ा चाय का इस समय 2311 हेक्टेयर क्षेत्र है, लेकिन हकीकत में 1100 हेक्टेयर पर ही चाय की खेती की जा रही है। जबकि, कांगड़ा चाय के उत्पादक 5989 हैं। कांगड़ा चाय को मिले जीआई पेटेंट का लाभ भी इस समय नहीं मिल रहा है। आईएचबीटी चाय के उत्पादन और इसकी कीमतें बढ़ाने में कई शोध कर रहा है। आईएचबीटी ने व्हाइट टी, परपल टी, टी वाइन समेत कई वैरायटियां तैयार कर ली हैं। यही कारण है कि चाय कारोबार में किसानों के घट रहे रुझान और चाय उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए आईएचबीटी में चाय उत्पादकों को कई जानकारियां दी गईं। चाय के घटते कारोबार को बढ़ावा देने के लिए अब चाय उत्पादकों ने आईएचबीटी पर ही भरोसा जताया है। उधर, आईएचबीटी के वरिष्ठ वैज्ञानिक चाय विशेषज्ञ डॉ. आरके सूद ने कहा कि आईएचबीटी चाय पर काफी शोध कर रहा है, जिसका आने वाले दिनों में लाभ मिलेगा।